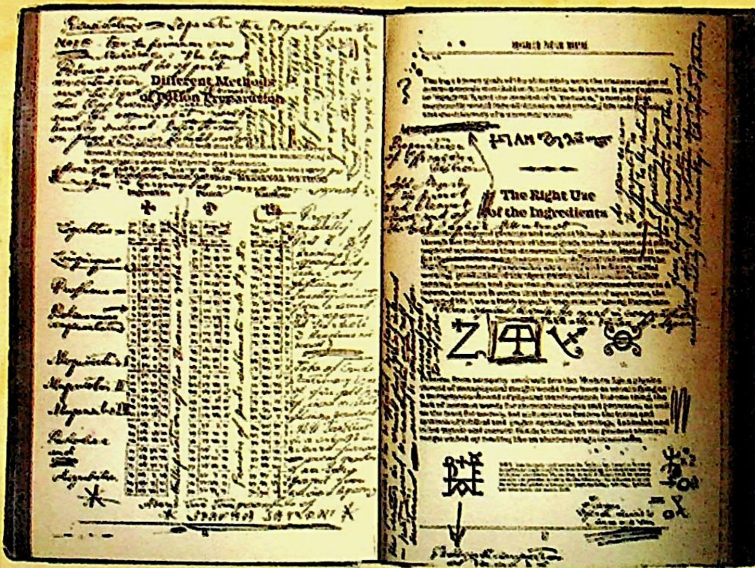
प्राचीन हस्तलिखित
पोथियों का विवरण

पाचवां खण्ड



सम्पादक

आचार्य नलिनविलोचन शर्मा



बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना-4

प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण

[पाचवाँ खण्ड]

सम्पादक
आचार्य नलिनविलोचन शर्मा
शोध-सहायक
श्रीरामनारायण शास्त्री
श्रीविधाता मिश्र

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद्
पटना-६

प्रथम संस्करण ; विक्रमाब्द २०१८ ; शकाब्द ; १८८३ सृष्टाब्द १९६१

द्वितीय संस्करण-११०० प्रतियाँ
शकाब्द - अग्रहायण १९३६
विक्रमाब्द - २०७१
सृष्टाब्द - २०१५

मूल्य - ४५/- रूपये

मुद्रकः
हिमाचल प्रेस
दरियापुर, पटना-४

वक्तव्य

मुझे अतिशय प्रसन्ता है कि 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण नामक पुस्तक के पांचवें खण्ड के द्वितीय संस्करण का प्रकाशन परिषद् द्वारा हो रहा है। परिषद् की स्थापना से ही हस्तलिखित पोथियों के अन्वेषण संकलन, ग्रंथ विवरण प्रकाशन तथा अनुसंधान का कार्य प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ शोध विभाग में होता रहा है।

इस खण्ड में २११ महत्वपूर्ण संस्कृत हस्तलिखित पोथियों के विवरण प्रकाशित है। इसमें देवनागरी के अतिरिक्त मिथिलाक्षर, बंगाक्षर लिखित ग्रन्थों के विवरण भी है। यही नहीं तालपत्रों पर भी लिखित ग्रन्थों के विवरण भी है। सम्पादकीय के बाद बारह शीर्षकों में विभक्त ये विवरण अनुसंधान के लिए बड़े ही उपयोगी हैं। परिशिष्ट में अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ भी दी गयी हैं, ख, ग, घ, शीर्षक के अन्तर्गत मिथिलाक्षर, बंगाक्षर, ताल पत्र पर उपलब्ध ग्रन्थों की अनुक्रमणिका उपलब्ध है। आचार्य नलिन विलोचन शर्मा द्वारा सम्पादित ये विवरण साहित्य का गौरव है।

पुनर्मुद्रण इस रूप में शीघ्र आ जाने का श्रेय हमारे प्रूफ रीडर तथा प्रकाशन विभाग को है। मैं उन्हें बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि विद्वानों का पूर्ववत सहयोग मिलता रहेगा।

१४ जनवरी २०१५

निदेशक

बिहार–राष्ट्रभाषा–परिषद्

रिसर्च-सोसायटी की ओर से भी संकलित हस्तलिखित पोथियों के विवरण चार खण्डों में मुद्रित हुए हैं, किन्तु वे ग्रन्थ उक्त अनुसंधान-संस्थान में संकलित नहीं हैं। इस विवरण में विशिष्ट ग्रन्थकारों के सम्बन्ध में सूचनात्मक टिप्पणी भी दे दी गई है। अन्त के परिशिष्ट (१–अज्ञात ग्रन्थकारों के ग्रन्थों की अनुक्रमणिका, २–ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका, ३–ग्रन्थों की अनुक्रमणिका, ४–महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य खोज-विवरणों में उनके उल्लेख का विवरण) अवश्य सुधी अनुसंधायकों को शोध में सहायक होंगे।

अन्त में इस महत्त्वपूर्ण विवरण-ग्रन्थ के सम्पादक स्व० आचार्य श्रीनलिनविलोचन शर्मा के तत्त्वावधान में अनुशीलन-कार्य में संलग्न अनुसंधायकद्वय—श्रीरामनारायण शास्त्री और श्रीविधाता मिश्र—को हम धन्यवाद देते हैं, जिनकी योग्यता, लगन और शोध-कुशलता का यह प्रसून है। जिन ग्रन्थाधिपों के ग्रन्थों के विवरण इसमें प्रकाशित हैं, हम उनके प्रति भी साभार कृतज्ञता प्रकट करते हैं। आशा है, इस विवरण से अनुसंधित्सुओं को विशेष लाभ होगा। पहले के चार खण्डों का हिन्दी-संसार में अच्छा स्वागत हुआ है।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
दुर्गापूजा
शकाब्द १८८३



भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'
संचालक

संकेत-विवरण

वि० सं० — विक्रम-संवत्
क्र० सं० — क्रम-संख्या
वि० — विषय
ग्र० सं० — ग्रन्थ-संख्या
प० सं० — पत्र-संख्या
फ० — फसली सन्
आ० — आकार
ई० — ईसवी-सन्
ल० सं० — लक्ष्मण-संवत्
खो० वि० — खोज-विवरणिका
दे० ना० — देवनागरी
र० का० — रचना-काल
लि० का० — लिपि-काल और लिपिकार
पृ० सं० — पृष्ठ-संख्या
प्र० पृ० पं० — प्रति-पृष्ठ-पंक्तियाँ
खो० वि० ग्रं० — खोज-विवरण-ग्रन्थ
बि० रा० भा० प०, पट — बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना
आ० शा० भं० ज० ग्रं० सू० — आमेर शास्त्र-भंडार-जयपुर (जैन) ग्रंथ-सूची
क० प्रा० ता० ग्रं० — कन्नड प्रान्तीय तालपत्रीय ग्रन्थ-सूची
जै० सि० भ०, आ० सू० — जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा, सूची
सी० सी० पार्ट — कैटलोगस कैटलोगेरम (ऑफ्रेट) स्क्रिप्ट्स भाग
सी० एस० सी० — कलकत्ता-संस्कृत-कॉलेज
एच् पी० एस० खं० — हरप्रसादशास्त्री खण्ड
बी० एम्० — ब्रिटिश म्यूजियम
सी० पी० बी० पी० — सेंट्रल प्रोविन्स एन्ड बरार प्रोविन्स
डिस० कैट० एम्० — डिस्क्रिप्टिव केटलॉग ऑफ् संस्कृत मैनस्क्रिप्ट्स गवर्मेन्ट ओरियंटल मैनस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी मद्रास
हि० सा० सं०, प्र० — हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग
का० ना० प्र० सं०, खो० वि० — काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा, खोज-विवरण
प्रा० सं० ह० लि० पो०, खो० वि० खं० ५—प्राचीन संस्कृत हस्तलिखित पोथियों का खोज-विवरण, खण्ड-५

बि० रि० सो०, पट० — बिहार-रिसर्च-सोसायटी, पटना
डिस० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दि अ० ला०— डिस्क्रिप्टिव कैटलॉग ऑफ् संस्कृत मैनस्क्रिप्ट्स इन् दि अड्यार लाइब्रेरी
डिस कैट० ऑफ् मि० मैन० — डिस्क्रिप्टिव कैटलॉग ऑफ् मिथिला मैनस्क्रिप्ट्स
जै० शा० भं० ग्र० सू० — जैन-शास्त्रभंडार ग्रन्थ-सूची
न्यू० कैट० कैट०, यू० म० — न्यू कैटलोगस कैटलोगेरम, यूनिवर्सिटी, मद्रास
हि० सा० और बि० — 'हिन्दी-साहित्य और बिहार'
रा० जै० शा० भ०, ग्र० सू०, २ भाग — राजस्थान जैन० शास्त्र-भंडार, ग्रन्थ-सूची, दूसरा भाग
सी० ए० — कैटलॉग ऑफ् मैनस्क्रिप्ट्स, इन दि एशियाटिक सोसायटी ऑफ् बंगाल
सी० आई० ओ० — कैटलॉग ऑफ् मैनस्क्रिप्टस इन् दि इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी
एच्० पी० एस्० — कैटलॉग ऑफ् मैनस्क्रिप्ट्स एडिटेड बाइ हरप्रसाद शास्त्री
आर० एल्० एम्० — कैटलॉग ऑफ् मैनस्क्रिप्टस एडिटेड बाइ राजेन्द्रलाल मित्र
बी० एम्० — कैटलाग ऑफ् ब्रिटिश म्यूजियम
ए० सी० — (ए० कॉबटन) पेरिस
डी० सी० पी० — गवर्नमेंएट कॉलेक्शन्स ऑफ् मैनस्क्रिप्ट्स, डेकन कॉलेज पूना
ट्री० कैट० — ट्रिनीयल कैटलॉग ऑफ् मै० गवर्नमेंएट ओरियण्टल मै० लाइब्रेरी, मद्रास।
बी० एस० सी० — बनारस संस्कृत कॉलेज (मै० कैटलॉग)
जे० बी० — जैसलमेर-भंडार
भ० ओ० आर० आई० — भंडारकर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना (१९२५)
रा० ला० मि० — राजेन्द्रलाल मित्र

विषयानुक्रम

विवरणों में सम्भवतः नहीं हैं। निम्नलिखित प्रमुख ग्रन्थकारों की रचनाएँ बिहार-रिसर्च-सोसाइटी को खोज में मिल चुकी हैं—

जगन्नाथ[१], माघ[२], कालिदास (मिश्र)[३], धर्मदास[४], भानुदत्तमिश्र[५], अमरु[६], मुरारि[७], कवि कालिदास[८], भवभूति[९], जयदेव[१०], भारवि[११], वेणीदत्त[१२], रुद्रधर[१३], उमापति[१४], पराशर[१५], हलायुध[१६], रघुनन्दन भट्टाचार्य[१७], वाचस्पति[१८],

---

१—दे० बिहार और उड़ीसा रिसर्च-सोसाइटी से प्रकाशित (१९३३)—'डिस्क्रिप्टिव कैटलॉग ऑव मैनस्क्रिप्ट्स इन मिथिला' (खं० २, खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर में मुद्रित) पृष्ठ० १०६, १०७, ग्रं० सं० १०३—४ प्रतियाँ।

२—दे० वही—पृष्ठ० १६४—१६६, ग्रं० सं० १५६, ए-डी—७ प्रतियाँ।

३—दे० वही—पृ० ६७, ग्रं० सं० ६३, ए—बी—३ प्रतियाँ।

४—दे० पृष्ठ० १४३, १४५, ग्रं० सं० १४०, १४५—४ प्रतियाँ।

५—दे० वही—पृ० ५१, ग्रं० सं० ४७।

६—दे० वही—पृष्ठ० ८, ९, ग्रं० सं० ६, ए, बी, सी—४ प्रतियाँ।

७—दे० वही—पृ० १, ग्रं० १, ए—२ प्रतियाँ।

८—दे० वही - पृष्ठ० २०, २१, २७, ११८, ग्रं० सं० २०, ए; २६, ए, बी; ११४, ए, बी—८ प्रतियाँ।

९—दे० वही पृ० १११, ग्रं० सं० १०७।

१०—दे० वही—पृष्ठ० ३९—४४, ग्रं० सं० २७, ए; ३६, ए—एल्—१६ प्रतियाँ।

११—दे० वही—पृष्ठ० २३, २५, ग्रं० सं० २३, ए—एफ—८ प्रतियाँ।

१२—दे० वही—पृ०—४४, ग्रं० सं० ३४ ए—जी—७ प्रतियाँ।

१३—दे० वही—खण्ड १, पृष्ठ० ४३७—४४८, ग्रं० सं० ३८२ ए—एच्१—३५ प्रतियाँ।

१४—दे० वही - खण्ड १, पृष्ठ० ४२४—४२९, ग्रं० सं० ३७३ ए—एच्—९ प्रतियाँ और ग्रं० सं० ३७४, ए—सी—४ प्रतियाँ।

१५—दे० वही—खण्ड १, पृष्ठ० २७०-२७१, ग्रं० सं० २४९ तथा २४९ ए—बी—३ प्रतियाँ और ग्रं० सं० २५०, केवल १ प्रति।

१६—दे० वही—खण्ड १, पृ० ३२७, ग्रं० सं० २८६ तथा २८६ ए—२ प्रतियाँ और पृ० ३२८, ग्रं० सं० २८७—१ प्रति।

१७—दे० वही, खण्ड १, पृष्ठ० ५१३ एवं ५१४, ग्रं० सं० ४३८ एवं ४३८ ए—२ प्रतियाँ।

१८ (क)—(द्वैतनिर्णय) वही, खण्ड १, पृष्ठ० २३९—२४२, ग्रं० सं०—२२७ ए—जे—११ प्रतियाँ।

१८ (ख) - (श्राद्धचिन्तामणि)-वही, खण्ड १, पृष्ठ० ४६०-४६३, ग्रं० स० ३९३, ३९३ए - आइ - १० प्रतियाँ

महामहोपाध्याय महेश ठाकुर[1], श्रीपति भट्ट[2], विश्वनाथ[3] और शिवदास[4]।

इस विवरण-पुस्तिका में ग्रन्थों की संख्या विषयानुक्रम से निम्नलिखित हैं—(१) काव्य, नाटक-स्तोत्र, कथा आदि—४०, (२) दर्शन (वेदान्त, मीमांसा, सांख्य, तर्कशास्त्र आदि)—४६, (३) स्मृति, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, दीक्षा आदि—३१, (४) ज्यौतिष—१८, (५) आगमशास्त्र (तंत्र, मंत्र आदि)—१६, (६)—पुराण एवं इतिहास—१७, (७) व्याकरण—२८, (८) छन्दःशास्त्र—६, (९) आयुर्वेद और (१०) उपवेद।

इन ग्रन्थों को जिन महानुभावों ने परिषद्-संग्रहालय के लिए भेंट के रूप में, मूल्य लेकर अथवा निर्मूल्य दिया है, वे धन्यवादार्ह हैं।

जीर्ण-शीर्ण पोथियों को व्यवस्थित करने तथा उन्हें पढ़कर उनके विवरण प्रस्तुत करने में परिषद् के प्राचीन हस्तलिखित पोथी-शोध-विभाग के सुयोग्य शोध-सहायक श्रीविधाता मिश्र ने बड़ी निष्ठा से कार्य किया है। श्रीरामनारायण शास्त्री ने विवरण की प्रेस-कापी तैयार करने में जो श्रम किया है, उसका उल्लेख भी आवश्यक है।

महाशिवरात्रि
२०१६ वि०

नलिनविलोचन शर्मा
अध्यक्ष
प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ-शोध-विभाग

१—दे० वही—पृष्ठ० १५३—१५७; ग्रं० सं०१४६, १४६ ए—एम्—१४ प्रतियाँ।

२—दे० वही—खण्ड—३, पृष्ठ० १४३—१४४, ग्रं० सं०१२३, १२३.ए—ई—६ प्रतियाँ।

३—इस नाम के दो ग्रन्थकार हो गये हैं। दोनों की पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं। दे० वही—खण्ड ३, पृष्ठ० ३२-३३, ४५-४६, ग्रं० सं० ३३ ए, ४३-४४ और पृष्ठ० ६६ ६८, ११०-११२, १५७-१५९, २६४, ४६०, ४८५-४८७, ५०९-५१०, ग्रं० सं० ५७ ए—डी, ६५ ए—वी, १३५ ए-सी, २५२, ३८५, ४०९ ए-बी, ४२३ ए-बी—२४ प्रतियाँ।

४- दे० वही - खण्ड २, पृ० १५९, ग्रं० सं० १५५।

प्राचीन संस्कृत हस्तलिखित पोथियों का विवरण

काव्य, नाटक, स्तोत्र, कथा आदि

५२—कुंवरसिंह चरित। ग्र०—शिवकुमारमिश्र[1]। र०—वि० सं० १६६६। लि०—शिवकुमारमिश्र। लि० का०—वि० सं० १६६६। वि०—काव्य। लिपि—दे० ना०। प० सं०—११०। दशा—पूर्ण। अमुद्रित। आ०—७"×११"।

५३—कविकर्पटी। ग्र०—शंखोदर भट्ट[2]। र०—×। लि०—ईश्वरदत्त पाठक। लि० का०—×। वि०—काव्य। लिपि—दे० ना०। प० सं०—११। दशा—पूर्ण। मुद्रित। आ०—६.१०"×४.६"।

५४—बिहारी सतसई—संस्कृत टीका। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—काव्य। लिपि—दे० ना०। प० सं०—२२। दशा—खण्डित। आ०—१.८"×५"।

५५—भामिनी विलास। ग्र०—जगन्नाथ[3]। र०—प्रसिद्ध। लि०—राममनोरथ। लि० का०—वि० सं० १८७१। वि०—काव्य। लिपि—दे० ना०। प० सं०—२५। दशा—खण्डित। मुद्रित। आ०—६.१२"×४.४"।

५६—अनेकार्थध्वनिमंजरी। ग्र०—×। र०—×। लि०—मत्तगजराज। लि० का०—×। वि०—काव्य। लिपि—दे० ना०। प० सं०—६। दशा—खण्डित। मुद्रित। आ०—८.१२"×३.१२"।

१—भभुआ, शाहाबाद-निवासी; १६७० वि० के लगभग वर्तमान; 'पद्यमय वीर अर्जुन' के रचयिता; भागवत महापुराण के हिन्दी-रूपान्तरकार; अनेक अप्रकाशित ग्रन्थों के प्रणेता। हिन्दी और संस्कृत में लिखी इनकी रचनाएँ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

२—मिथिला संस्कृत-विद्यापीठ (दरभंगा) के प्राध्यापक श्रीअनन्तलाल ठाकुर के मतानुसार ये सम्भवतः भागलपुर-निवासी थे तथा इन्हीं का नाम शंखोदर भी था। इनका जीवन-काल अज्ञात है।

३—'पण्डितराज' उपाधि से प्रसिद्ध ये काशी-निवासी तैलङ्ग ब्राह्मण थे एवं यवन-सम्राट् शाहजहाँ और उसके पुत्र दाराशिकोह के प्रिय कवि थे। इनका जीवन-काल १७वीं शताब्दी (खृष्टीय) के प्रथम चरण से तृतीय चरण तक माना जाता है। इनकी निम्न-लिखित रचनाएँ प्रसिद्ध हैं—(क) रसगङ्गाधर, (ख) भामिनीविलास, (ग) मनोरमा-कुचमर्दिनी टीका, (घ) करुणालहरी, (ङ) गङ्गालहरी, (च) अमृतलहरी, (छ) लक्ष्मी-लहरी एवं (ज) सुधालहरी।

५७—शिशुपालवध—जाड्यापहारिणी टीका[1]। ग्र०— महाधन। र०—×। लि०—माधव। लि० का०—×। वि०—काव्य। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१८०। दशा—खण्डित। अमुद्रित। आ०—११.१२"×५.८"।

५८—शिशुपालवध। ग्र०— माघ। र०—प्रसिद्ध। लि०—रामचन्द्र। लि० का०—वि० सं० १८६०। वि०—काव्य। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१७१। दशा—पूर्ण। मुद्रित। आ०—१२.८"×३.२"।

५९—नलोदय काव्य (सुबोधिनी टीका-सहित)। मू० ग्र०—कालिदास[2]। टीका०—×। र०—×। लि०—जगदीश। लि० का०—वि० सं० १६९१। वि०—काव्य। लिपि—दे० ना०। प० सं०—५०। दशा—पूर्ण। मुद्रित। आ०—९.५"×३.४"।

६०—विदग्धमुखमण्डन। ग्र०—धर्मदास। र०—×। लि०—गोपालमिश्र। लि० का०—वि० सं० १८८९। वि०—काव्य। लिपि—दे० ना०। प० सं०—७४। दशा—खण्डित। मुद्रित। आ०—११.८"×४.८"।

६१—विदग्धमुखमण्डन। ग्र०—धर्मदास। र०—×। लि०—×। लि० का०—वि० सं० १७७४। वि०—काव्य। लिपि—दे० ना०। प० सं०—२५। दशा—पूर्ण। मुद्रित। आ०—१०.१२"×३"।

६२—प्रस्तावरत्नाकर। ग्र०—हरिदास[3]। र०—×। लि०—×। लि० का०—× वि०—काव्य। लिपि—दे० ना०। प० सं०—२२। दशा—खण्डित। आ०—९.१२"×४.४"।

६३—हरिहरपरायण। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—वि सं० १८८८। वि०—काव्य। लिपि—दे० ना०। प० सं०—७४। दशा—खण्डित। आ०—१०.८"×५.२"।

६४—अध्यात्मरामायण। ग्र०—वेदव्यास। र०—प्रसिद्ध। लि०—×। लि० का०—×। वि०—काव्य। लिपि—मैथिली। प० सं०—२६५। दशा—पूर्ण। मुद्रित। आ०—१४.२"×४.६"।

६५—कविकल्पलता। ग्र०—देवेश्वर। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—काव्य। लिपि—मैथिली। प० सं०—२६। दशा—पूर्ण। मुद्रित। आ०—११.१४"×४"।

१—यह टीका अभी तक प्रायः अमुद्रित है। विवरण-ग्रन्थों में टीकाकार का नाम अनागत है।

२—विश्व-प्रसिद्ध महाकवि कालिदास से भिन्न १७वीं शती (खृष्टीय) के मिथिला-निवासी का[illegible]दास से अभिन्न प्रतीत होते हैं।

३—'पुस्ताव-रत्नाकर' के ग्रन्थकार हरिदास नवोपलब्ध है। अन्य खोज-विवरणिकाओं में इनके नाम की चर्चा नहीं हो पाई है।

६६—वीरविरुदावली। ग्र०—रघुदेवमिश्र। र०—×। लि०—श्रीभवनाथ शर्मा। लि० का०—शाके १८२१। वि०—काव्य। लिपि—मैथिली। प० सं०—२६। दशा—पूर्ण। मुद्रित। आ०—१२"×४"।

६७—रसपारिजात[1] (तालपत्र)। ग्र०—भानुदत्तमिश्र[2]। र०—१४वीं शती। लि०—×। लि० का०—×। वि०—काव्य। लिपि—मैथिली। प० सं०—६०। दशा—खण्डित। मुद्रित। आ०—१५.४"×२"।

६८—रसतरङ्गिणी। ग्र०—भानुदत्तमिश्र। र०—१४वीं शती। लि०—×। लि० का०—×। वि०—काव्य। लिपि—दे० ना०। प० सं०—४५। दशा—खण्डित। मुद्रित। आ०—११"×४.८"।

१—यह ग्रन्थ खण्डित रूप में कविशेखर बदरीनाथ झा (साहित्य-प्राध्यापक, धर्मसमाज संस्कृत-कॉलेज, मुजफ्फरपुर) के सम्पादकत्व में प्रायः १६४० ई० में मोतीलाल बनारसीदास द्वारा प्रकाशित हो चुका है। यह रस-सिद्धान्त का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

२—ये दरभंगा जिला के सरिसव-पाही ग्राम के निवासी संस्कृत के विद्वान् थे। इन्होंने 'अनौचित्यादृते नान्यद्रसभङ्गस्य कारणम्' यह पद्य आनन्दवर्धन (८५० ई०—८८५ ई०) के ध्वन्यालोक (पृ० १४५) से अथवा महिमभट्ट (११वीं शती खृष्टीय द्वितीय चरण) के व्यक्तिविवेक (पृ० ३१) से लिया है और धनञ्जय (लगभग १००० ई०) के दशरूपक का नामोल्लेख किया है। इन्होंने अपनी कृति गीतगौरीश की रचना जयदेव (१२वीं शताब्दी)-रचित गीतगोविन्द के आदर्श पर की है। इनकी रसमञ्जरी पर गोपदेव ने 'विकास' नामक टीका १४३७ ई० में लिखी है और शार्ङ्गधर-पद्धति (लगभग १३६३ ई०) में भी भानु पण्डित के नाम से कुछ पद्य उद्धृत किये गये हैं। अतएव भानुदत्त का समय सम्भवतः ईसा की १३वीं और १४वीं शती का मध्यकाल है। किन्तु अन्य इतिहासकारों के मत से ये सोलहवीं शती में वर्त्तमान थे। डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल ने बिहार-रिसर्च-सोसाइटी के विवरण में चौदहवीं शती में इनकी स्थिति का उल्लेख किया है। दे० 'डिस्क्रिप्टिव कैटलॉग ऑव मैनस्क्रिप्ट्स इन मिथिला' खं० २ (काव्य-खण्ड), पृ० ५। इनकी 'गीतगौरीपति' नामक रचना बिहार-रिसर्च-सोसाइटी को भी खोज में मिली है। दे० ग्रं० सं० ४७, पृ० ५१। इस रचना का उल्लेख 'कैटलॉगस् कैटलोगेरम' में तथा कलकत्ता संस्कृत-कॉलेज की सूची में भी हुआ है। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं—(क) रसमञ्जरी, (ख) रसतरङ्गिणी, (ग) रसपारिजात, (घ) अलंकार तिलक, (ङ) गीतगौरीश, (च) तिथिविचार एवं कुछ स्फुट पद्य।

६९—अमरुशतक (सटीक) । ग्र०—अमरु कवि[1] । र०—×। टीका०—ज्ञानानन्द कलाधर। लि०—×। लि० का०—× । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना०। प० सं०—२६ । दशा—पूर्ण । मुद्रित ।

७०—अलंकारमंजरी । ग्र०—वेणीदत्त । र०—×। लि०—सुखलालमिश्र। लि० का०—वि० सं० १८२५ । वि०—काव्य । लिपि— दे० ना० । प० सं—२४ । दशा – खण्डित ।

७१—मुरारि नाटक (अनर्घराघव) । ग्र०– मुरारि[2] । र०—नवीं शताब्दी । लि०—×। लि० का०—×। वि०—काव्य (नाटक) । लिपि– दे० ना० । प० सं०—५१ । दशा—खण्डित । मुद्रित । आ०—१०.१४"×४.२" ।

७२—मुद्राराक्षस । ग्र०—विशाखदत्त[3] । र०—प्रसिद्ध । लि०—बुलाराम । लि० का०—

१—इतिहास में कहीं-कहीं इनका नाम अमरुक भी मिलता है। इनका समय खृष्टीय ६वीं शती का उत्तरार्द्ध अथवा उससे पूर्व माना जाता है; क्योंकि ध्वन्याचार्य आनन्दवर्धन ८५० ई०—८८५ ई० ने अपने ध्वन्यालोक में इनके मुक्तकों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है—

'मुक्तकेषु हि प्रबन्धेष्विव रसबन्धाभिनिवेशिनः कवयो दृश्यन्ते। तथा ह्यमरुकस्य कवेः मुक्तकाः शृङ्गारस्पन्दिनः प्रबन्धायमाणाः प्रसिद्धा एव।'

२—ये मौद्गल्यगोत्री श्रीवर्धमानक तथा तनुमति देवी के पुत्र थे। ये मैथिल ब्राह्मण थे एवं इनकी कौलिक उपाधि 'मिश्र' थी । 'बाल वाल्मीकि' नाम से भी इनकी ख्याति है। महाकवि रत्नाकर (८२५ ई०) के 'हरविजय' नामक महाकाव्य की निम्नलिखित पंक्तियाँ मुरारि को भवभूति (७३६ ई०) से पश्चाद्वर्त्ती सिद्ध करती हैं। अतः, इनका समय अष्टम शतक का उत्तरार्द्ध माना जाता है।

३—मुद्राराक्षस की प्रस्तावना में इन्होंने स्वयं अपना कौलिक परिचय दिया है, किन्तु इनका जीवन-काल अभीतक सन्दिग्ध ही है। निम्नलिखित श्लोक के आधार पर इनके जीवन-काल के सम्बन्ध में अनेक तर्क हैं—

वाराहीमात्मयोनेस्तनुभवनविधावास्थितस्यानुरूपां
यस्य प्राग्दन्तकोटिप्रलयपरिगता शिश्रिये भूतधात्री।
म्लेच्छैरुद्वेज्यमाना भुजयुगमधुना संश्रिता राजमूर्त्तेः
स श्रीमद्बन्धुभृत्यश्चिरमवतु महीं पार्थिवोऽवन्तिवर्मा ॥१॥

(क) दक्षिण-भारत के पल्लव-नरेश दन्तिवर्मा का समय ७२० ई० के लगभग माना जाता है, किन्तु उस समय के किसी भी आक्रमणकारी म्लेच्छ का पता नहीं चलता। (ख) डॉक्टर जायसवाल ने चन्द्रगुप्त द्वितीय (३७५–४१३ ई०) विक्रमादित्य को ही उपर्युक्त भरत-वाक्य का विषय माना है। अतः उनके मत से इनका समय ४०० ई० के लगभग है, किन्तु यह मत तथ्यपूर्ण प्रतीत नहीं होता है; क्योंकि म्लेच्छों (हूणों)

वि० सं० १६३५ । वि०—काव्य (नाटक) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—९३ । दशा—पूर्ण । मुद्रित । आ०—९.४"×३.१२" ।

७३—सप्तशतीव्याख्या । प्र०—नागोजिभट्ट[1] । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—काव्य (स्तोत्र) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१७ । दशा—पूर्ण । मुद्रित । आ०—९.४"×४" ।

७४—सौन्दर्यलहरी । प्र०—शङ्कराचार्य[2] । र०—९वीं शती । लि०—× । लि० का०—

का शासन-काल चन्द्रगुप्त-शासन के करीब ५० वर्ष बाद आरम्भ होता है। (ग) टीकाकार ढुण्ढिराज के मतानुसार भरत-वाक्य में चन्द्रगुप्त मौर्य का वर्णन है; जिसके अनुसार इनका समय चतुर्थ शती ई० पू० है। किन्तु यह प्रसङ्ग-विरुद्ध है। (घ) वस्तुतः मौखरिवंश के कन्नौज-नरेश अवन्तिवर्मा (लगभग ५८२ ई०) के समय में म्लेच्छों (हूणों) का उपद्रव पश्चिमोत्तर भारत (पंजाब) में विशेष रूप से हुआ था। उन हूणों को अवन्तिवर्मा ने थानेश्वर के राजा प्रभाकरवर्द्धन की सहायता से परास्त किया था। अतः, मुद्राराक्षसनाटककार विशाखदत्त का जीवन-काल छठी शती (खृष्टीय) का उत्तरार्द्ध मानना चाहिए।

१—ये संस्कृत-व्याकरण, अलङ्कार-शास्त्र तथा योगदर्शन के निष्णात विद्वान् थे । इनका जीवन-परिचय अभीतक पूर्ण रूप से प्रकाश में नहीं आया है। इनका नाम नागेश भी था। ये काशी-निवासी, महाराष्ट्र ब्राह्मण एवं शृङ्गवेरपुर (इलाहाबाद के समीप) के रामसिंह राजा के आश्रित, सिद्धान्तकौमुदी के रचयिता भट्टोजिदीक्षित के प्रपौत्र हरिदत्त के शिष्य थे। अतः, नागोजिभट्ट का समय सम्भवतः १७वीं शती का अन्तिम चरण अथवा १८वीं शती का प्रथम चरण है। भानुदत्त की रसमञ्जरी पर जो नागोजिभट्ट-कृत टीका है, उसकी हस्तलिखित प्रति, जिसमें सन् १७१२ ई० की तिथि स्पष्ट रूप से लिखित है, इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी (लन्दन) में सुरक्षित है। इनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं—(क) महाभाष्य टीका (उद्योत-विवृति), (ख) परिभाषेन्दुशेखर, (ग) लघुशब्देन्दु-शेखर, (घ) लघुमञ्जूषा, (ङ) परमलघुमञ्जूषा, (च) रसगङ्गाधर-टीका, (छ) योगसूत्र-विवृत्ति, (ज) काव्यप्रकाश-टीका एवं (झ) रसमञ्जरी-टीका आदि।

२—इनका जन्मस्थान दक्षिण-भारत के केरल-प्रान्त में कोचीन शोरानूर रेलवे लाइन पर स्थित 'आलवाई' स्टेशन से करीब पाँच मील की दूरी पर अवस्थित काटली ग्राम है। ये नम्बूदरी ब्राह्मण थे एवं शिवगुरु तथा सती के सुपुत्र थे। इनका जीवन-काल ९वीं शती है। मूल ग्रन्थ, भाष्य-ग्रन्थ, प्रस्थानत्रयी, गीता-भाष्य, उपनिषद्-भाष्य, इतर ग्रन्थों पर भाष्य, स्तोत्र ग्रन्थ, प्रकरण-ग्रन्थ, तन्त्र-ग्रन्थ आदि विविध ज्ञानशाखाओं के शताधिक ग्रन्थ इन्होंने लिखे। काव्य, स्तोत्र एवं तन्त्र तीनों की दृष्टि से इनकी सौन्दर्यलहरी महत्त्वपूर्ण है। इस पर ३५ विद्वानों ने टीकाएँ लिखी हैं, जिनमें लक्ष्मीधर, कैवल्याश्रम, भास्कर राय, कामेश्वर सूरि तथा अच्युतानन्द प्रमुख हैं।

वि० सं० १८५७ । लिपि—दे० ना० । वि०—काव्य (स्तोत्र) । प० सं०—७ । दशा—पूर्ण । मुद्रित । आ०—६.५"×४" ।

७५—वेतालपंचविंशतिका । ग्र०—शिवदास[1] । र०—× । लि०—× । लि० का०—वि० सं० १६७४ । वि०—काव्य (कथा) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—६३ । दशा—पूर्ण । मुद्रित । आ०—१०.४"×४.४" ।

७६—रघुवंश । ग्र०—कालिदास । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× । वि०—काव्य । लिपि—बँगला । पं० सं०—१२२ । दशा—खण्डित । आ०—१६"×२.१२" ।

७७—मालतीमाधव (तालपत्र) । ग्र०—भवभूति । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× । वि०—काव्य । लिपि—मैथिली । प० सं०—११२ । दशा—खण्डित । आ०—१४"×१.१२" ।

७८—दुर्गासप्तशती (तालपत्र) । ग्र०—व्यास । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का—× । वि०—स्तोत्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—२४ । दशा—खण्डित । आ०—८.४"×२.१०" ।

७९—अध्यात्मरामायण । ग्र०—वेदव्यास । र०—प्रसिद्ध × । लि०—× । लि० का०—× । वि०—काव्य । लिपि—बँगला । पं० सं०—११६ । दशा—खण्डित । आ०—१७.८"×५" ।

८०—गीतगोविन्द । ग्र०—जयदेव । र०—प्रसिद्ध । लि०—प्रेमदास । लि० का०—सं० १६७१ । वि०—काव्य । लिपि—देवनागरी । प० सं०—१५ । दशा—पूर्ण । आ०—१२"×६" ।

८१—किरातार्जुनीय । ग्र०—भारवि । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× । वि०—काव्य । लिपि—देवनागरी । प० सं०—२३ । दशा खण्डित । आ०—११.६"×४" ।

८२—गीतगोविन्द । ग्र०—जयदेव । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× । वि०—काव्य । लिपि—देवनागरी । प० सं०—४६ । दशा—पूर्ण । आ०—८"×३.८" ।

८३—रसकौस्तुभ । ग्र०—वेणीदत्त[2] । र०—× । लि०—जगन्नाथ । लि० का०—१२८० फ० । वि०—काव्य । लिपि—मैथिली । प० सं०—२५ । दशा—खण्डित । आ०—११"×४" ।

८४—शिशुपालवधटीका (तालपत्र) । ग्र०—माघ । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि०

१—अज्ञात और नवोपलब्ध ग्रन्थकार । यह रचना बिहार-रिसर्च सोसाइटी को भी खोज में मिली है ।

२—१८८७ वि० में वर्त्तमान, अलङ्कारमञ्जरी के मिथिला-निवासी रचयिता । यह ग्रन्थ बिहार-रिसर्च-सोसाइटी को भी खोज में मिला है ।

का०—× । वि०—काव्य । लिपि—मैथिली । प० सं०—५७ । दशा—खण्डित । आ०—१४"×२" ।

८५—दशकुमारचरित । ग्र०—दण्डी । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× । वि०—काव्य । लिपि—मैथिली । प० सं०—८४ । दशा—खण्डित । आ०—६.८"×४.८" ।

८६—रामगीत । ग्र०—जयदेव । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—८ । दशा—पूर्ण । आ०—६"×४" ।

८७—स्फुट श्लोकसंग्रह । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—प्रकीर्ण काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—५५ । दशा—पूर्ण । आ०—६·८"×३·१२" ।

८८—ऋतुसंहार । ग्र०—कालिदास । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—सं० १६१६ । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२० । दशा—पूर्ण । आ०—११.१२"×४.४" ।

८९—कुमारसम्भव । ग्र०—कालिदास । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—सं० १७१६ । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२७ । दशा—खण्डित । आ०—८.४"×४" ।

९०—महावीरचरित । ग्र०—भवभूति । र०—प्रसिद्ध । लि०—गोविन्दसिंह वर्मा । लि० का०—सं० १९७० । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—४७ । दशा—केवल पञ्चम अङ्क, 'आरण्यक' पूर्ण । आ०—६.१२"×५.८" ।

९१—गीतगोविन्द (रसमञ्जरी टीका-सहित) । ग्र०—जयदेव । र०—प्रसिद्ध । टीका०—म० म० शङ्करमिश्र । र०—× । लि०—कृष्णनाथ पंडा । लि० का०—सं० १८५० । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—८६ । दशा—पूर्ण । आ०—१०"×५" ।

दर्शन (वेदान्त, मीमांसा, सांख्य, तर्कशास्त्र आदि)

९२—वेदान्तसार-सुबोधिनी टीका । ग्र०—नरसिंह सरस्वती । र०—× । लि०—रामानुग्रह शर्मा । लि० का०—× । वि०—दर्शन । लिपि—दे० ना० । प० सं०—५२ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—११"× ५.८" ।

९३—वाक्यसुधा (कला टीका-सहित) मूल ग्र०—शङ्कराचार्य । र०—९वीं शताब्दी । टीका०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—दर्शन । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२४ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—१०"×४.१२" ।

९४—आत्मबोध । ग्र०—शङ्कराचार्य । र०—९वीं शताब्दी । लि०—रामहित । लि० का०—वि० सं० १९५८ । वि०—दर्शन । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१२ । दशा—पूर्ण । आ०-१०, ८"×४,८" ।

९५—वेदान्तसंज्ञाप्रक्रिया। ग्र०—शङ्कराचार्य। र०—९वीं शताब्दी। लि०—रामहित। लि० का०—×। वि०—दर्शन। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१७। दशा—पूर्ण। आ०—१०.१०"×४.१०"।

९६—विधिरसायन। ग्र०—अप्पयदीक्षित। र०—१६वीं शती। लि०—×। लि० का०—×। वि०—दर्शन (मीमांसा)। लिपि दे०—ना०। प० सं०—१८५। दशा—खण्डित, मुद्रित। आ०—९"×४"।

९७—शास्त्रदीपिका। ग्र०—म० म० पार्थसारथि मिश्र[1]। र०—×। लि०—×। लि० का० -×। वि०—दर्शन (मीमांसा)। लिपि—दे० ना०। प० सं०—४९७। दशा—खण्डित, मुद्रित। आ०—१०.८"×४"।

९८—मीमांसारत्न। ग्र०—रघुनाथ भट्टाचार्य। र०—×। लि०—×। लि० का०—वि० सं० १६९८। वि०—दर्शन (मीमांसा)। लिपि—दे० ना०। प० सं०—४६। दशा—खण्डित। आ०—११.८"×४.४"।

९९—सांख्यसूत्रवृत्ति—ग्र०—×। र०—×। लि०—हरिकृष्ण। लि० का०—वि० सं० १८९१। वि०—दर्शन (सांख्य)। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१४। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—१०.१२"×४.६"।

१००—सांख्यतत्त्वकौमुदी। ग्र०—वाचस्पति मिश्र[2]। र०—९वीं शती। लि०—हरिकृष्ण। लि० का०—वि० सं० १८७५। वि०—दर्शन (सांख्य)। लिपि—दे० ना०। प० सं०—५२। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—११"×४.१२"।

१०१—गौडपादभाष्य। ग्र०—गौडपाद। र०—×। लि०—×। लि० का०—वि० सं० १८५२। वि०—दर्शन (सांख्य)। लिपि—दे० ना०। पं० सं०—५४। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—१०.१०"×५"।

१—ये सम्भवतः मैथिल थे एवं इनका स्थिति-काल लगभग १२वीं शती माना जाता है। इन्होंने टुप्टीका की व्याख्या 'तर्करत्न' तथा श्लोक-वार्त्तिक की मान्य टीका 'न्यायरत्नाकर' लिखी हैं। इनका मौलिक प्रकरण ग्रन्थ शास्त्रदीपिका भाट्टमत का नितान्त प्रामाणिक, उपादेय तथा प्रमेयबहुल माना जाता है।

२—वाचस्पतिमिश्र नामक दो दार्शनिक मिथिला में हो चुके हैं। एक लगभग ९वीं शताब्दी में और दूसरे प्रायः १५वीं शताब्दी में। उक्त ग्रन्थकार प्राचीन वाचस्पति हैं। इनका निवास-स्थान मिथिला के बड़गाम (बड़ागाँव, मधुबनी सब डि०, दरभंगा) नामक ग्राम में था। ये द्वादशदर्शनटीकाकार कहलाते थे। नास्तिक-दर्शन की टीकाएँ अभी तक उपलब्ध नहीं हुई हैं, आस्तिक-दर्शन की कृतियाँ, जो प्रकाश में आ चुकी हैं, निम्नलिखित हैं—(क) न्यायकणिका, (ख) तत्त्वसमीक्षा, (ग) तत्त्वबिन्दु, (घ) न्यायवार्त्तिक तात्पर्यटीका, (ङ) साख्यतत्त्वकौमुदी, (च) योगभाष्यविवृति, (छ) ब्रह्मसूत्र-शांकर भाष्य-टीका (भामती) इत्यादि।

१०२—ब्रह्मनिरूपणा । ग्रं०— कबीरदास[२] (?) । र०—प्रसिद्ध । लि०—हुलासी पाण्डेय । लि० का०—वि० सं० १९५७ । वि०—दर्शन । लिपि— दे० ना० । प० सं०— ५६ । दशा—पूर्ण । आ०—६.१०"×४.४" ।

१०३—दशमात्रा । ग्रं०— कबीरदास (?) । र०—प्रसिद्ध । लि०—हुलासी पाण्डेय । लि० का०—वि० सं० १९५७ । वि०- दर्शन । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२० । दशा—पूर्ण । आ०— ६.१२"×४.५" ।

१०४—अद्वैतलक्षणाचन्द्रिका । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—दर्शन (वेदान्त) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—४६८ । दशा—खण्डित । आ०—१५"×७.१२" ।

१०५—पदार्थतत्त्व । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—दर्शन । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२६ । दशा—खण्डित, मुद्रित । आ० – १२"×५"

१०६—वेदान्तपरिभाषा । ग्र०—धर्मराजदीक्षित । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—दर्शन (वेदान्त) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२६ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—९.६"×४.१०" ।

१०७—तत्त्वचिन्तामणिदीधितिप्रकाश । ग्र०—× । र०—× । लि०—परमानन्द । लि० का०—ल० सं० ४७७ । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—१२३ । दशा—खण्डित, मुद्रित, तालपत्र । आ०—१४"×१.१२" ।

१०८—न्यायसिद्धान्तमञ्जरी । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—बँगला । प० सं०—२३ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—१३"×३.२" ।

१०९—न्यायादर्श । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—बँगला । प० सं०—१६ । दशा—पूर्ण, अमुद्रित । आ०—१३"×३.२" ।

११०—अवच्छेदकावच्छेदेनानुमितिविचारः । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—८ । दशा—खण्डित । आ०—१८"×३.८" ।

१११—अनुमितेर्मानसत्वनिराकरणम् । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—६ । दशा—पूर्ण । आ०—१८"× ३.८" ।

११२—व्युत्पत्तिवाद—ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—३७ । दशा—खण्डित । आ०—११.८"×३.८" ।

२—ग्रन्थ-रचयिता के रूप में अनेक जगह कबीरदास के नाम आये हैं । एक जगह पृ० ५८ में 'इतिश्रीसद्गुरुविरचितम्' ऐसा भी निर्देश है । इस ग्रन्थ में ३७६ पद्य हैं । यह एक नवोपलब्ध ग्रन्थ है ।

११३—विषयतावाद। ग्र०—गदाधर भट्टाचार्य। र०—१७वीं शती। लि०—तारानाथ। लि० का०—शाके १७६८। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—१६। दशा—पूर्ण। आ०—११.८"×३.८"।

११४—शक्तिवाद। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—२०। दशा—खण्डित। आ०—११.१२"×३.१२"।

११५—अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारणभावः। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—१७। दशा—पूर्ण। आ०—१८.४"×३.८"।

११६—प्रामाण्यवाद। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—१३। दशा—पूर्ण। आ०—१८"×३.८"।

११७—सन्निकर्षनिरूपण। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—१०। दशा—खण्डित। आ०—१७.१४"×३.८"।

११८—आचार्यानुमानरहस्य। ग्र०—गदाधर भट्टाचार्य। र०—१७वीं शती। लि० का०—×। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—६। दशा—पूर्ण। आ०—१८.८"×३.६"।

११९—श्रीमद्भगवद्गीता। ग्र०—व्यास। र०—प्रसिद्ध। लि०—प्रेमदास। लि० का०—सं० १९२१। वि०—दर्शन। लिपि—देवनागरी। प० सं०—२४। दशा—पूर्ण। आ०—१२"×५.८"।

१२०—हठप्रदीपिका। ग्र०—स्वात्माराम। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—दर्शन (हठयोग)। लिपि—देवनागरी। प० सं०—२०। दशा—पूर्ण। आ०—१२"×५.४"।

१२१—स्वरोदयशास्त्र। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—दर्शन। लिपि—देवनागरी। प० सं—१६। दशा—पूर्ण। आ०—१२"×५.४"।

१२२—शारीरकमीमांसा-भाष्य। ग्र०—शङ्कराचार्य। र०—६वीं शती। लि०—×। लि० का०—×। वि०—दर्शन। लिपि—देवनागरी। प० सं०—१०८। दशा—खण्डित। आ०—११.८"×५.८"।

१२३—पक्षता गादाधरी। ग्र०—गदाधर भट्टाचार्य। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—१२। दशा—खण्डित। आ०—१८"×३.८"।

१२४—वेदान्तसार। ग्र०—सदानन्द। र०—×। लि०—×। लि० का०—शाके १७२३। वि०—दर्शन। लिपि—मैथिली। प० सं०—१०। दशा—पूर्ण। आ०—१०.१२"×४.१०"।

१२५—योगवासिष्ठसार। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—योग। लिपि-मैथिली। प० सं० - १०। दशा-पूर्ण। आ० ११.८"×४"।

१२६—श्रीमद्भगवद्गीता (तालपत्र)। ग्र०—व्यास। र०—प्रसिद्ध। लि०—×। लि० का०—×। वि०—दर्शन। लिपि—मैथिली। प० सं—६८। दशा—खण्डित। आ०—११"×२"।

१२७—परामर्श गादाधरी। ग्र०—गदाधर भट्टाचार्य। र०—१७वीं शती। लि०—×। लि० का०—×। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—२२। दशा—पूर्ण। आ०—१८"×३.८"।

१२८—योगसूत्र। ग्र०—पतञ्जलि। र०—प्रसिद्ध। लि०—शुभनाथ। लि० का०—×। वि०—दर्शन (योग)। लिपि—मैथिली। प० सं०—५। दशा—पूर्ण, एक अंश। आ०—६.८"×४.४"।

१२९—तर्कभाषा। ग्र०—केशवमिश्र। र०—×। लि०—देवकण्ठ। लि० का०—सं० १७१५। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—दे० ना०। प० सं०—३६। दशा—पूर्ण। आ०—६×"३.१२"।

१३०—योगवासिष्ठसार। ग्र०—×। र०—×। लि०—हरिकृष्ण। लि० का०—सं० १८६३। वि०—दर्शन। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१२। दशा—पूर्ण। आ०—१०"×४.८"।

१३१—सव्यभिचार-टीका (क्रोडपत्र)। ग्र०—जगदीश। र०—×। लि०—लोकनाथ। लि० का०—×। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—दे० ना०। प० सं०—३०। दशा—खण्डित। आ०—२०"×४"।

१३२—हेत्वाभाससामान्यनिरूपण (क्रोडपत्र)। ग्र०—जगदीश। र०—×। लि०—लोकनाथ। लि० का०—×। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—दे० ना०। प० सं०—४१। दशा—पूर्ण। आ०—२०"×४"।

१३३—पक्षताविचार (क्रोडपत्र)। ग्र०—जगदीश। र०—×। लि०—लोकनाथ। लि० का—×। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—दे० ना०। प० सं०—८०। दशा—पूर्ण। आ०—२०"×४"।

१३४—अवच्छेदकत्वविचार (क्रोडपत्र)। ग्र०—जगदीश। र०—×। लि०—लोकनाथ। लि० का०—×। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—दे० ना०। प० सं०—४६। दशा—पूर्ण। आ०—२०"×४"।

१३५—व्यधिकरण-विचार (क्रोडपत्र)। ग्र०—जगदीश। र०—×। लि०—लोकनाथ। लि० का०—×। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—दे० ना०। प० सं०—४२। दशा—पूर्ण। आ०—२०"×४"।

१३६—व्याप्तिपञ्चक-टीका (क्रोडपत्र)। ग्र०—जगदीश। र०—×। लि०—लोकनाथ। लि० का०—×। वि०—तर्कशास्त्र। लिपि—दे० ना०। प० सं०—६। दशा—खण्डित। आ०—२०"×४"।

१३७ - श्री मदभगवदगीता (सुबोधिनी टीका-सहित)। टीका० श्रीधरस्वामी।

र०—× । लि०—× । लि० का०—सं० १८४८ । वि०—दर्शन । लिपि—दे० ना० । प० सं०—६८ । दशा—पूर्ण । आ०—१०"×५" ।

स्मृति, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, दीक्षा आदि

१३८—स्मार्त्तोल्लास । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—स्मृति । लिपि—दे० ना० । प० सं०—५५ । दशा—खण्डित । आ०—११.८"×५" ।

१३९—स्मृतितत्त्व । ग्र०—रघुनन्दन भट्टाचार्य । र०— × । लि०—रघुनन्दन भट्टाचार्य । लि० का०—× । वि०—स्मृति । लिपि—मैथिली । प० सं०—६८ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—१२.४"×४.८" ।

१४०— पाराशरी स्मृति । ग्र०— पराशर । र०—प्रसिद्ध । लि०—रामरक्षा । लि० का०—वि० सं० १६०४ । वि०—स्मृति । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१६ । दशा-—खण्डित, मुद्रित । आ०—१०.१२"×४.१०" ।

१४१—कालनिर्णयदीपिका । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—३७ । दशा—खण्डित । आ०—१०.८"×३.१२" ।

१४२—धर्मप्रवृत्ति । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि— दे० ना० । प० सं—७२ । दशा – खण्डित । आ०—१३"×५.२" ।

१४३—पुष्टिप्रवाहमर्यादाविवरण । ग्र०— पीताम्बर । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१६ । दशा—पूर्ण । आ०—१०.८"×४.१०" ।

१४४—गृह्यसूत्र । ग्र०— पारस्कर । र०—प्रसिद्ध । लि०—मुकुन्दराम । लि० का०—वि० सं० १६०३ । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—८१ । दशा—पूर्ण मुद्रित । आ०—१०.८"×४.८" ।

१४५—प्रायश्चित्तप्रदीपिका । ग्र०—भास्कराचार्य । र०— प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि०—दे० ना० । प० सं०—७४ । दशा—खण्डित । आ०—१०.१८"×४.६" ।

१४६—द्वैतनिर्णय । ग्र०—वाचस्पतिमिश्र [1] । र०—१५वीं शती । लि०—देवनाथ । लि० का०—फसली सन् १२८४ । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि – मैथिली । प० सं०—४८ । दशा—पूर्ण । मुद्रित । आ०—१२.४"×४.१०" ।

१—इनका स्थितिकाल लगभग १५वीं शताब्दी तथा निवास-स्थान सम्भवतः दरभंगा-जिला था । ये व्याकरण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र आदि के प्रकाण्ड विद्वान् थे और महाराज भैरवसिंह के दरबार में राजपण्डित थे । इनकी कृति पितृभक्तितरङ्गिणी के निम्नलिखित उद्धरण के अनुसार इनके ४१ ग्रन्थ थे, जिनमें निम्नलिखित

१४७—अद्वैतनिर्णयप्रदीप। ग्र०—गोकुलनाथ* । र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—धर्मशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—९। दशा—पूर्ण। आ०—११.४"×४.८"।

१४८—ब्राह्मणसर्वस्व। ग्र०—हलायुध। र० - ×। लि०—देवदत्त झा। लि० का०—वि० सं० १७३६। वि०—धर्मशास्त्र। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१५४। दशा—पूर्ण। मुद्रित। आ०—११.४"×५.१०"।

१४९—लिङ्गार्चनचन्द्रिका। ग्र०—सदाशिव। र०—×। लि०—×। लि० का०—वि० सं० १८०५। वि० धर्मशास्त्र। लिपि—दे० ना०। प० सं०—२८६। दशा—पूर्ण। आ०—१०"×५"।

१५० - मन्त्रमहोदधि। ग्र०—महीधर। र०—×। लि०—रघुनाथ। लि० का० —×। वि० सं० १८८५। वि०—कर्मकाण्ड। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१४४। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—१०.२"×५.२"।

१५१—मन्त्रप्रदीप। ग्र० - हरपति। र०- १४वीं शती। लि०— ×। लि० का०— ×।

प्रकाश में आ चुके हैं—(क) आचारचिन्तामणि, (ख) विवादचिन्तामणि, (ग) व्यवहारचिन्तामणि, (घ) शुद्धिचिन्तामणि, (ङ) तीर्थचिन्तामणि, (च) श्राद्धचिन्तामणि, (छ) षोडश महादाननिर्णय, (ज) कृत्यप्रदीप, (झ) कृत्यमहार्णव, (ञ) द्वैतनिर्णय, (ट) पितृभक्तितरङ्गिणी इत्यादि।

शास्त्रे दश स्मृतौ त्रिंशन्निबन्धा येन यौवने।
निर्मितास्तेन चरमे वयस्येष विनिर्ममे॥
—पितृभक्तितरङ्गिणी।

* ये वत्सगोत्रीय मैथिल ब्राह्मण थे तथा महाराज राघवसिंह के समय (शकाब्द १७वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध) में दरभंगा जिला के मँगरौनी ग्राम में निवास करते थे। विद्यानिधि पीताम्बर उपाध्याय तथा उमादेवी के ये पुत्र थे तथा सकल शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित थे। कुछ दिनों तक ये गढ़वालश्रीनगराधीश फतेशाह के आश्रित थे और उन्हीं की आज्ञा से इन्होंने एकावली नामक प्रामाणिक छन्दोग्रन्थ की रचना की। (क) अमृतोदय (नाटक), (ख) एकावली (छन्दोग्रन्थ), (ग) कादम्बरी (कीर्तिश्लोक), (घ) कादम्बरीप्रदीप (द्वैतनिर्णय-टीका), (ङ) कादम्बरी प्रश्नोत्तरमाला (च) काव्यप्रकाश-टीका, (छ) कुण्डकादम्बरी, (ज) कुसुमाञ्जलि-टिप्पणी। (झ) पदवाक्यरत्नाकर, (ञ) मुक्तिवाद-विचार आदि इनके २३ ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

वि०—दीक्षा। लिपि—मैथिली। प० सं०—६१। दशा—पूर्ण। आ०—१२"×४.१०"।

१५२—तडागोत्सर्गपद्धति। ग्र०—रघुशर्मा। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—कर्मकाण्ड। लिपि—मैथिली। प० सं०—२७। दशा—खण्डित। आ०—१३"×३.४"।

१५३—शुद्धिविवेक। ग्र०—रुद्रधर। र०—१६वीं शती। लि०—×। लि० का०—×। वि०—धर्मशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—५६। दशा—पूर्ण। आ०—१२.८"×४"।

१५४—गौरीशङ्कर-प्रतिष्ठाविधि। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—कर्मकाण्ड। लिपि—मैथिली। प० सं०—३१। दशा—पूर्ण। आ०—१३"×३.८"।

१५५—धर्मशास्त्रनिबन्ध (तालपत्र)। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—धर्मशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—५०। दशा—खण्डित। आ०—१३.८"×१.१२"।

१५६—याज्ञवल्क्यस्मृति-धर्मशास्त्रीय विवृति टीका। ग्र०—विज्ञानेश्वर। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—धर्मशास्त्र। लिपि—बँगला। प० सं०—४८। दशा—पूर्ण, आ०—१२.८"×५"।

१५७—शिवलिङ्गप्राणप्रतिष्ठाविधि। ग्र०—कल्याण। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०-कर्मकाण्ड। लिपि—मैथिली प० सं०—५१। दशा—पूर्ण। आ०—१२"×४.१२"।

१५८—श्राद्धचिन्तामणि। ग्र०—वाचस्पति। र०—१५वीं शती। लि०—देवनाथ। लि० का० ×। वि०—धर्मशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—७०। दशा—पूर्ण। आ०-१२.८"×४.१२"।

१५९—शुद्धिविवेक। ग्र०—रुद्रधर। र०—१६वीं शती। लि०—रामाधीन। लि० का०—सं० १८८७। वि०—धर्मशास्त्र। लिपि—देवनागरी। प० सं०—६८। दशा—पूर्ण। आ०—८.१२"×३.१२"।

१६०—सरोजसुन्दर। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—सं० १८५०। वि०—कर्मकाण्ड। लिपि—देवनागरी। प० सं०—२५। दशा—पूर्ण। आ०—११.८"×५.४"।

१६१—आह्निकम्। ग्र०—रूपनाथ। र०—×। लि०—×। लि० का०—शाके १७६०। वि०—कर्मकाण्ड। लिपि—मैथिली। प० सं०—१२। दशा—पूर्ण। आ०—१०.४"×४.८"।

१६२—शुद्धिविवेक। ग्र०—रुद्रधर। र०—१६वीं शती। लि०—×। लि०

का०—×। वि०—धर्मशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—२३। दशा—खण्डित। आ०—११"×४.८"।

१६३—शुद्धिनिर्णय। ग्र०—उमापति। र०—१८वीं शती। लि०—×। लि० का०—×। वि०—धर्मशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—१६। दशा—खण्डित। आ०—१२"×४.८"।

१६४—मलमासतत्त्व। ग्र०—रघुनाथ भट्टाचार्य। र०—×। लि०—×। लि० का०—× वि०—धर्मशास्त्र। लिपि—बँगला। प० सं०—१०४। दशा—पूर्ण। आ०—१६"×३.४"।

१६५—एकादशीतत्त्व। ग्र०—रघुनन्दन भट्टाचार्य। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—धर्मशास्त्र। लिपि—बँगला। प० सं०—११०। दशा—पूर्ण। आ०—१६.८"×३"।

१६६—शुद्धितत्त्व। ग्र०—रघुनन्दन भट्टाचार्य। र०—×। लि०—काशीनाथ शर्मा। लि० का०—शकाब्द १७३४। वि०—धर्मशास्त्र। लिपि—बँगला। प० सं०—१२६। दशा—खण्डित। आ०—१८.४"×३.४"।

१६७—शुभकर्मनिर्णय। ग्र०—मुरारिमिश्र। र०—८वीं शती। लि०—शत्रुनाथ। लि० का०—शकाब्द १८०३। वि०—धर्मशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—३६। दशा—खण्डित। आ०—१२.४"×४.१२"।

१६८—तिथिनरत्नचिन्तामणि। ग्र०—म० म० महेश ठाकुर। र०—प्रसिद्ध। लि०—×। लि० का०—यवनाब्द १२८६। वि०—धर्मशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—२६। दशा—पूर्ण। आ०—१२.४"×४.१२"।

ज्यौतिष

१६९—ग्रहलाघवसिद्धान्तरहस्योदाहरण। ग्र०—विश्वनाथ। र०—×। लि०—×। लि० का०—वि० सं० १८५०। वि०—ज्यौतिष। लिपि—दे० ना०। प० सं०—७४। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—१२.१०"×३.४"।

१७०—कृपासिन्धु। ग्र०—कृपाराम। र०—×। लि०—×। लि० का०—वि० सं० १८६०। वि०—ज्यौतिष। लिपि—देवनागरी। प० सं०—२४। दशा—पूर्ण। आ०—११.६"×४"।

१७१—शम्भुहोराप्रकाश। ग्र०—पुञ्जराज, र०—×। लि०—उजागर शर्मा। लि० का०—वि० सं० १६१२। वि०—ज्यौतिष। लिपि—देवनागरी। प० सं०—१००। दशा—पूर्ण. मुद्रित। आ०—१०.१२"×४.१०"।

१७२—नवरत्न। ग्र०—परमसुखोपाध्याय। र०—×। लि०—उजागर शर्मा। लि० का०—वि० सं० १६१४। वि०—ज्यौतिष। लिपि—देवनागरी। प० सं०—४४। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—१०.१२"×४.१०"।

१७३—मुहूर्त्तमार्त्तण्ड। ग्र०—×। र०—×। लि०—उजागर शर्मा। लि० का०—वि० सं० १९१०। वि०—ज्यौतिष। लिपि—देवनागरी। प० सं०—१८। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—१२.१२"×४.१२"।

१७४—मुहूर्त्तगणपति। ग्र०—गणपति। र०—१५वीं शती। लि०—×। लि० का०—×। वि०—ज्यौतिष। लिपि—देवनागरी। प० सं०—६७। दशा—खण्डित, मुद्रित। आ०—१२"×५.४"।

१७५—ज्यौतिषरत्नमाला। ग्र०—श्रीपतिभट्ट। र०—×। लि०—उजागरदत्त। लि० का०—वि० सं० १९०४। वि०—ज्यौतिष। लिपि—देवनागरी। प० सं०—५८। दशा—पूर्ण। आ०—१२.४"×४.४"।

१७६—ज्यौतिषरत्नमाला। ग्र०—श्रीपतिभट्ट। र०—×। लि०—लक्ष्मीचन्द्र। लि० का०—वि० सं० १८८४। वि०—ज्यौतिष। लिपि—देवनागरी। प० सं०—४३। दशा—पूर्ण। आ०—१२"×५.१०"।

१७७—रत्नद्योत। ग्र०—गङ्गाराम। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—ज्यौतिष। लिपि—देवनागरी। प० सं०—४०। दशा—खण्डित। आ०—१०.८"×४.८"।

१७८—मुहूर्त्तभूषण। ग्र०—व्रजभूषणमिश्र। र०—वि० सं० १५११। लि०—रुद्रदत्त। लि० का०—वि० सं १८७१। वि०—ज्यौतिष। लिपि—देवनागरी। प० सं०—३५। दशा—पूर्ण। आ० १०"×६"।

१७९—बृहज्जातक। ग्र०—महीधर। र०—×। लि०—×। लि० का०—सं० १९१०। वि०—ज्यौतिष। लिपि—दे० ना०। प० सं०—७४। दशा—पूर्ण। आ०—१३"×५"।

१८०—जातकपद्धति। ग्र०—श्रीपतिभट्ट। र०—×। लि०—उजागर शर्मा। लि० का०—सं० १९१२। वि०—ज्यौतिष। लिपि—दे० ना०। प० सं०—६०। दशा—पूर्ण। आ०—१३"×४.१२"।

१८१—भास्वती विवरण-टीका। ग्र०—श्रीमाधवमिश्र। र०—×। लि०—उजागर शर्मा। लि० का—सं०१९१२। वि०—ज्यौतिष। लिपि—दे० ना०। प० सं०—३४। दशा—पूर्ण। आ०—१०.१०"×४.१०"।

१८२—मुहूर्त्तचिन्तामणि। ग्र०—दैवज्ञराम। र०—प्रसिद्ध। लि०—शिवसहाय। लि० का०—सं० १८७१। वि०—ज्यौतिष। लिपि—दे० ना०। प० सं०—४९। दशा—पूर्ण। आ०—१०"×४"।

१८३—भुवनदीपक। ग्र०—पद्मसूरि। र०—×। लि०—×। लि० का०—सं० १९१३। वि०—ज्यौतिष। लिपि—दे० ना०। प० सं०—९। दशा—पूर्ण। आ०—१०.४"×४.८"।

१८४—सूर्यसिद्धान्त । ग्र०—× । र०—× । लि०—उमापति । लि० का०—सं० १८५५ । वि०—ज्यौतिष । लिपि—दे० ना० । प० सं०—३५ । दशा—मानाध्याय पर्यन्त, पूर्ण । आ०—११.४"×४" ।

१८५—मकरन्दविवरण । ग्र०—दिवाकर । र०—× । लि०—उजागर शर्मा । लि० का०—सं० १९१० । वि०—ज्यौतिष । लिपि—दे० ना० । प० सं०—६ । दशा—पूर्ण । आ०—१२.४"×४.१२" ।

१८६—यात्रातत्त्व । ग्र०—रघुनन्दन भट्टाचार्य । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—ज्यौतिष । लिपि—बँगला । प० सं०—१६ । दशा—खण्डित । आ०—१५.१२"×३" ।

आगम-शास्त्र (तन्त्र, मन्त्र आदि)

१८७—प्रत्यक्तत्त्वप्रदीपिका । ग्र०—चित्सुख । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—आगम (तन्त्र) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१४ । दशा—खण्डित । आ०—१०.१०"×५.८" ।

१८८—वीरभद्र महातन्त्र । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—आगम (तन्त्र) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—६ । दशा—खण्डित । आ०—८.८"×५.६" ।

१८९—यन्त्रतन्त्रकोष्ठकचिन्तामणि । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—आगम (तन्त्र, यन्त्र आदि) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१६ । दशा—खण्डित । १०.१०"×४.६" ।

१९०—वीरतन्त्र (भैरवीतन्त्र) । ग्र०—× । र०—× । लि०—नीलकण्ठ । लि० का०—वि० सं० १७२६ । वि०—आगम (तन्त्र) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—७७ । दशा—पूर्ण । आ०—११.८"×५.८" ।

१९१—ताराभक्तिसुधार्णव । ग्र०—म० म० नरसिंह ठाकुर । र०—वि० सं० १८५३ । लि० का०—वि० सं० १८५३ । वि०—आगम (तन्त्र) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—८१ । दशा—पूर्ण । आ०— १०"×४.६" ।

१९२—सिद्धखण्ड (यक्षिणीसाधन) । ग्र०—नित्यनाथ सिद्ध । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—आगम (तन्त्र) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—३० । दशा— खण्डित । आ०—८.१२"×४" ।

१९३—नृसिंहतन्त्र । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—आगम (तन्त्र) । लिपि—मैथिली । प० सं०—१० । दशा—पूर्ण । आ०—७.१२"×३.१४" ।

१९४—भैरवतन्त्र (मन्त्रसङ्केतसंग्रह) । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—आगम (तन्त्र) । लिपि—मैथिली । प० सं०—३६ । दशा—पूर्ण । आ०—१२"×४" ।

१९५—कालीकल्पलता । ग्र०—विमर्शानन्दनाथ । र०—× । लि०—हीरामणि । लि० का०—वि० सं० १७६६ । वि०—आगम । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१४६ । दशा—खण्डित । आ०—५.११"×३.१३" ।

१९६—शारदातिलक । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—आगम । लिपि—दे० ना० । प० सं०—११२ । दशा—खण्डित । आ०—१३"×५" ।

१९७—ताराभक्तिसुधार्णव । ग्र०—नरसिंह ठाकुर । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—आगम । लिपि—मैथिली । प० सं०—२४ । दशा—पूर्ण । आ०—११"×४.८" ।

१९८—उड्डीशतन्त्र । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—आगम । लिपि—मैथिली । प० सं०—२७ । दशा—खण्डित । आ०—११.४"×५" ।

१९९—मन्त्रमहोदधि । ग्र०—महीधर । र०—× । लि०—उजागर शर्मा । लि० का०—सं०१९१२ । वि०—आगम । लिपि—दे० ना० । प० सं०—११७ । दशा—पूर्ण । आ०—१४.४"×५.८" ।

२००—शारदातिलक । ग्र०—× । र०—× । लि०—उजागर शर्मा । लि० का०—१९१३ । वि०—आगम । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१२१ । दशा—पूर्ण । आ०—१४.४"×५.८" ।

२०१—वर्णभैरवतन्त्र । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—आगम । लिपि—बँगला । प० सं०—१७ । दशा—पूर्ण । आ०—१७.१२"×३.४" ।

२०२—आगमशास्त्रविवरण । ग्र०—शङ्कर । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—सं० १८५२ । वि०—आगम । लिपि—दे० ना० । प० सं०—५४ । दशा—पूर्ण । आ०—१०.१०"×४.१४" ।

पुराण एवं इतिहास

२०३—ब्रह्मवैवर्त्तपुराण (कृष्णजन्मखण्ड) । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—पुराण । लिपि—मैथिली । प० सं०—३११ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—१५"×४.८" ।

२०४—नरसिंहपुराण। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—पुराण। लिपि—मैथिली। प० सं०—६६। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—१३.८"×५"।

२०५—त्रिविधाद्भुतसागरसार। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—पुराण। लिपि—मैथिली। प० सं०—२१। दशा—खण्डित। आ०—१२"×४.१२"।

२०६—राधाभक्तिमञ्जूषा। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—पुराण। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१३३। दशा—पूर्ण। आ०—१२.१३"×६.६"।

२०७—भगवद्भक्तिरत्नावली। ग्र०—×। र०—×। लि०—श्यामदास। लि० का०—वि० सं० १८५०। वि०—पुराण। लिपि—दे० ना०। प० सं०—५३। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—७.८"×३.१३"।

२०८—इतिहाससमुच्चय। ग्र०—×। र०—×। लि०—चतुर्भुज शर्मा। लि० का०—वि० सं० १९३८। वि०—इतिहास। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१५६। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—१३"×५"।

२०९—प्रश्नपरामर्श। ग्र०—चन्द्रशेखर[1]। र०—वि० सं० १९८८। लि०—चन्द्रशेखर। लि० का०—वि० सं० १९८८। वि०—पुराण। लिपि—दे० ना०। प० सं०—३७। दशा—पूर्ण, अमुद्रित। आ०—१२.१२"×८.२"।

२१०—वामनपुराण। ग्र०—व्यास। र०—प्रसिद्ध। लि०—×। लि० का०—×। वि०—पुराण। लिपि—देवनागरी। प० सं०—१४७। दशा—खण्डित। आ०—१२.८"×५.८"।

२११—त्रिविधाद्भुतसागरसार। ग्र०—चतुर्भुज। र०—×। लि०—भाईजी शर्मा। लि० का०—शाके १७८६। वि०—पुराण। लिपि—मैथिली। प० सं०—१६। दशा—पूर्ण। आ०—१२"×४.१२"।

२१२—कर्मविपाकसंहिता (तालपत्र)। ग्र०—×। र०—×। लि०—रघुनन्दन। लि० का०—शाके १६७४। वि०—पुराण। लिपि—मैथिली। प० सं०—१६५। दशा—खण्डित। आ०—१६"×१.८"।

२१३—महाभारत-ज्ञानदीपिका टीका (तालपत्र)। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—१७४१ सं०। वि०—पुराण। लिपि—मैथिली। प० सं०—१२४। दशा—खण्डित। आ०—१५.१२"×१.१२"।

१- इनका निवास-स्थान ग्राम-रामपुर, जिला-सारन तथा स्थिति-काल बि० सं० १९८८ के समीप माना जाता है।

२१४—काशीखण्ड-कथासंग्रह। ग्र०—×। र०—× लि०—×। लि० का०—। वि०—पुराण। लिपि—मैथिली। प० सं०—६५। दशा—खण्डित। आ०—१४.८"×६"।

२१५—काशीखण्डकथासंग्रह। ग्र०—×। र०—×। लि—×। लि० का०—×। वि०—पुराण। लिपि—मैथिली। प० सं०—६५। दशा—खण्डित। आ०—१५.८"×३"।

२१६—श्रीमद्भागवत (गद्यानुवाद)। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—पुराण। लिपि—बँगला। प० सं०—१४३। दशा—खण्डित। आ—१८"×३"।

२१७—गणेशखण्ड। ग्र०—×। र०—×। लि०—देवशर्मा। लि० का०—१२८५ साल। वि०—पुराण। लिपि—बँगला। प० सं०—१५२। दशा—पूर्ण। आ—१०"×४"।

२१८—देवीगीता। ग्र०—×। र०—×। लि०—काशीनाथ शर्मा। लि० का०—×। वि०—पुराण। लिपि—बँगला। प० सं०—१५। दशा—पूर्ण। आ०—१६"×३.४"

२१९—पुरुषोत्तमाहात्म्य। ग्र०—व्यास। र०—प्रसिद्ध। लि०—×। लि० का०—सं० १८७७। वि०—पुराण। लिपि—देवनागरी। प० सं०—८२। दशा—पूर्ण आ—९.१२"×५"

व्याकरण

२२०—परिभाषेन्दुशेखर—काशिकाविवृति। ग्र०—वैद्यनाथभट्ट। र०—वि० सं० १८६६। लि०—वैद्यनाथभट्ट। लि० का०—वि० सं० १८६६। वि०—व्याकरण। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१२७। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—१३"×४.१२"।

२२१—लघुशब्देन्दुशेखर—विषमी टीका। ग्र०—राघवेन्द्र। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—व्याकरण। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१५०। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—१३.४"×५"।

२२२—वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा। ग्र०—नागेश। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—व्याकरण। लिपि—मैथिली। प० सं—१०८। दशा—खण्डित, मुद्रित। आ०—१०"×४.४"।

२२३—परिभाषेन्दुशेखर। ग्र०—नागेश। र०—१८वीं शती। लि०—×। लि०

का०—×। वि०—व्याकरण। लिपि—मैथिली। प० सं०—४१। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—११"×४"।

२२४—सारस्वतव्याकरणभाष्य। ग्र०—काशीनाथ। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—व्याकरण। लिपि—दे० ना०। प० सं०—५६। दशा—खण्डित,। मुद्रित आ०—१०.८"×४.७"।

२२५—प्राकृतप्रकाश (मनोरमा टीका-सहित)। ग्र०—वररुचि[1]। र०—चतुर्थ शताब्दी। टीका०—भामह। टी० र०—६ठीं शती। लि०—×। लि० का०—शाके १७६६। वि०—प्राकृत व्याकरण, लिपि०—मैथिली। प० सं०—२२। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—११"×४"।

२२६—सिद्धान्तकौमुदी। ग्र०—भट्टोजिदीक्षित। र०—प्रसिद्ध। लि०—×। लि० का०—×। वि०—व्याकरण। लिपि—मैथिली। प० सं०—४३२। दशा—खण्डित। आ०—१०.८"×४"।

२२७—समासवाद। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—व्याकरण। लिपि—मैथिली। प० सं—४। दशा—खण्डित। आ०—१८"×३.८"।

२२८—वैयाकरणभूषण-परीक्षा टीका। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—व्याकरण। लिपि—मैथिली। प० सं०—७। दशा—खण्डित। आ०—११.८"×४.१२"।

२२९—शब्दकौस्तुभ। ग्र०—भट्टोजिदीक्षित। र०—प्रसिद्ध। लि०—×। लि० का०—×। वि०—व्याकरण। लिपि—मैथिली। प० सं०—१३३। दशा—खण्डित। आ०—११.४"×४८"।

२३०—लघुशब्दरत्न। ग्र०—नागेश। र०—प्रसिद्ध। लि०—×। लि० का०—×। वि०—व्याकरण। लिपि—मैथिला। प० सं०—१०१। दशा—खण्डित। आ०—१२"×४.४"।

२३१—सारस्वतप्रक्रिया (सटीक)। मूल ग्र०—अनुभूतिस्वरूपाचार्य। टी०—वासुदेवभट्ट। र०—प्रसिद्ध। लि०—×। लि० सु० का०—सं० १६२८। वि०—व्याकरण।

१—इस नाम के दो वैयाकरण हो चुके हैं। एक, पाणिनि (ई० पू० ५वीं शताब्दी) के बाद तथा पतञ्जलि (ई० पू० १५०) के पूर्व और दूसरे, गुप्तवंशीय महाराज विक्रमादित्य की सभा के महाकवि कालिदास आदि नवरत्नों में से। परवर्त्ती वररुचि प्राकृत वैयाकरण थे।

लिपि—नागरी । प० सं०—६८ । दशा—तद्धितान्त । आ०—१४.१२"×५.१४" ।

२३२—वैयाकरणभूषणसार । ग्र०—कौण्डभट्ट । र०—१८वीं शती । लि०—× । लि० का०—सं० १६३८ । वि०—व्याकरण । लिपि—देवनागरी । प० सं०—१३ । दशा—स्फोटवाद-पर्यन्त । आ०—६.१२"×४.८"

२३३—शब्दकौस्तुभ । ग्र०—भट्टोजिदीक्षित । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का—× । वि०—व्याकरण । लिपि—देवनागरी । प० सं०—५७ । दशा—खण्डित । आ०—६.४"×४" ।

२३४—शब्दकौस्तुभ । ग्र०—भट्टोजिदीक्षित । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× । वि०—व्याकरण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—४४ । दशा—खण्डित । आ०—६.४"×४" ।

२३५—वैयाकरणभूषणसार । ग्र०—कौण्डभट्ट । र०—१८वीं शती । लि०—× । लि० का०—× । वि०—व्याकरण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—११६ । दशा—खण्डित । आ०—१२.५"×४.१४" ।

२३६—शब्दकौस्तुभ । ग्र०—भट्टोजिदीक्षित । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× । वि०—व्याकरण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१२७ । दशा—खण्डित । आ०—१२"×४" ।

२३७—आख्यातरहस्य । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—व्याकरण । लिपि—मैथिली । प० सं०—१२ । दशा—खण्डित । आ०—१६"×३.८" ।

२३८—आख्यातवाद । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—व्याकरण । लिपि—मैथिली । प० सं०—२८ । दशा—खण्डित । आ०—१६×३.४" ।

२३९—दौर्गसिंहीयवृत्ति । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—व्याकरण । लिपि—बँगला । प० सं०—१३३ । दशा—खण्डित । आ०—१४.८"×३.१०" ।

२४०—दौर्गसिंहीयवृत्ति । ग्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—व्याकरण । लिपि—बँगला । प० सं०—८५ । दशा—खण्डित । आ०—१४"×३.८" ।

२४१—वैयाकरणभूषणसार (स्फोटवाद) । ग्र०—कौण्डभट्ट । र०—१८वीं शती । लि०—× । लि० का०—सं० १८३० । वि०—व्याकरण । लिपि—मैथिली । प० सं०—३२ । दशा—पूर्ण । आ०—१२"×५" ।

२४२—परमलघुमञ्जूषा। ग्र०—नागेश। र०—१८वीं शती। लि०—×। लि० का०—×। वि०—व्याकरण। लिपि—मैथिली। प० सं०—४६। दशा—खण्डित। आ०—६.४"×४"।

२४३—महाभाष्य (प्रदीप-सहित)। मू० ग्र०—पतञ्जलि। र०—प्रसिद्ध। टीका०—कैयट। र०—१८वीं शती। लि०—×। लि० का०—×। वि०-व्याकरण। लिपि—दे० ना०। प० सं०—२२१। दशा—खण्डित। आ०—१२.४"×६"।

२४४—महाभाष्य (प्रदीप-सहित)। मू० ग्र०—पतञ्जलि। र०—प्रसिद्ध। टीका०—कैयट। र०—१८वीं शती। लि०—×। लि० का०—×। वि०—व्याकरण। लिपि—दे० ना०। प० सं०—८५। दशा—खण्डित। आ०—११"×५"।

२४५—प्रौढमनोरमा। ग्र०—भट्टोजिदीक्षित। र०—प्रसिद्ध। लि०—×। लि० का०—×। वि०—व्याकरण। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१६३। दशा—खण्डित। आ०—११"×४.८"।

२४६—आख्यातचन्द्रिका। ग्र०—सूरसिंह। र०—प्रसिद्ध। लि०—×। लि० का०—×। वि०-व्याकरण। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१०८। दशा—लकारार्थ-पर्यन्त। आ०—१२.४"×४.१२"।

२४७—सारस्वतप्रक्रिया। ग्र०—अनुभूतिस्वरूपाचार्य। र०—प्रसिद्ध। लि०—आशुनाथ। लि० का०—१८७६ सं०। वि०—व्याकरण। लिपि—दे० ना०। प० सं०—६५। दशा—तद्धितान्त, पूर्ण। आ०—१२.४"×४.१२"।

छन्दःशास्त्र

२४८—वाणीप्रकाश (वर्णवृत्तिनिरूपण)। ग्र०—खेन्दु। र०—×। लि०—×। लि० का०—वि० सं० १७७९। वि०—छन्दःशास्त्र। लिपि—देवनागरी। प० सं०—४०। दशा—खण्डित। आ०—१०.८"×४.११"।

२४९—छन्दोमञ्जरी। ग्र०—गङ्गादास। र०—×। लि०—रामचन्द्र। लि० का०—वि० सं० १८५६। वि०—छन्दःशास्त्र। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१६। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—६"×४.२"।

२५०—पिङ्गलसार (सारविकासिनी टीका-सहित)। मू० ग्र०—×। टीका०—रविकर मिश्र। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—छन्दःशास्त्र। लिपि—दे० ना०। प० सं०—४३। दशा—खण्डित। आ०-१३.८"×५.८"।

२५१—छन्दोवृत्ति। ग्र०—हलायुध[1]। र०—×। लि०—×। लि० का०—×।

१—इनकी दो कृतियों के विषय में पता चलता है—(क) हलायुधकोश और (ख) छन्दोवृत्ति। इनका स्थिति-काल लगभग ७वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है। पञ्जीप्रबन्ध के अनुसार सोदरपुरिए मूल, जिस वंशक्रम में म० म० शङ्करमिश्र हो चुके हैं, के ये आदि पुरुष माने जाते हैं। इनका निवास अनुमानतः दरभङ्गा जिला के सरिसव-पाही गाँव में था।

वि०—छन्दःशास्त्र। लिपि—मैथली। प० सं०—३२। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—११"×४.८"।

२५२—वाणीभूषण। ग्र०—दामोदर[1]। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—छन्दःशास्त्र। लिपि—दे० ना०। प० सं०—२६। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—१४"×५.६"।

२५३—प्राकृतपिङ्गल। ग्र०—पिङ्गलाचार्य। र०—प्रसिद्ध।। लि०—×। लि० का०—×। वि०—छन्दःशास्त्र। लिपि—मैथिली। प० सं०—२५। दशा—खण्डित। आ०—१४.८"×३"।

आयुर्वेद

२५४—माधवनिदान। ग्र०—माधव। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—आयुर्वेद। लिपि—देवनागरी। प० सं०—१७२। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—१२"×५.१०"।

२५५—रोगदर्पण। ग्र०—×। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—आयुर्वेद। लिपि—देवनागरी। प० सं०—१६। दशा—खण्डित। आ०—१०.१०"×४.८"।

२५६—वैद्यावतंस। ग्र०—लोलिम्बराज। र०—×। लि०—×। लि० का०—वि० सं० १८८६। वि०—आयुर्वेद। लिपि—देवनागरी। प० सं०—१३। दशा—खण्डित, मुद्रित। आ०—१०"×४.८"।

२५७—चक्रसंग्रह। ग्र०—चक्रपाणि। र०—वि० सं० १५५३। लि०—×। लि० का०—×। वि०—आयुर्वेद। लिपि—देवनागरी। प० सं०—१८२। दशा—खण्डित, मुद्रित। आ०—१०.४"×४"।

२५८—शार्ङ्गधरसंहिता। ग्र०—शार्ङ्गधर। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—आयुर्वेद। लिपि—देवनागरी। प० सं०—५२। दशा—एक अंश, पूर्ण। आ०—१२"×४"।

प्रातिशाख्य एवं उपनिषद्

२५९—प्रातिशाख्य। ग्र०—कात्यायन। र०—ई० पू० तृतीय शताब्दी। लि०—महादेव शर्मा। लि० का०—×। वि०—प्रातिशाख्य। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१४। दशा—पूर्ण, मुद्रित। आ०—८"×४.४"।

२६०—जावालोपनिषद् (सटीक)। मू० ग्र०—जाबाल। र०—×। टी० का०—श्रीशङ्करानन्द। टी० र०—×। लि० का०—×। वि०—उपनिषद्। लिपि—दे० ना०। प० सं०—२३। दशा—खण्डित। आ०—१०.८"×२.८"।

२६१—कालाग्निरुद्रोपनिषद्। ग्र०—×। र०—×। लि०—कालजीदास। लि०

१—ये महाकवि विद्यापति के आश्रयदाता महाराज कीर्त्तिसिंह के दरबार में रहते थे।

का०—×। वि०—उपनिषद्। लिपि—दे० ना०। प० सं०—१०। दशा—पूर्ण। आ०—६.६"×४.४"।

धनुर्वेद

२१२—धनुर्वेद[1]। ग्र०—सदाशिव। र०—×। लि०—×। लि० का०—×। वि०—धनुर्वेद। लिपि—दे० ना०। प० सं०—७८। दशा—खण्डित। आ०—६.१२"×४.४"।



१—इस ग्रन्थ का एवं ग्रन्थकार का नाम सुस्पष्ट नहीं है, किन्तु है यह धनुर्वेदविषयक एक महत्त्वपूर्ण सङ्कलित ग्रन्थ। यह वीरेश्वर और सदाशिव के धनुर्वेदविषयक रचनांशों का संग्रह है।

सम्पूर्ण ग्रन्थ पाँच भागों में विभक्त है। (क) प्रथम भाग में चार विभाग (पाद) हैं—(अ) प्रथम पाद में धनुःप्रमाण, गुणफल, शरलक्षण, स्थानमुष्ट्याकर्षणलक्षण, गुणमुष्टि, मुष्टिसन्धान, लक्ष्य आदि विषयों का प्रतिपादन है और अन्त में है—'इति वीरेश्वरीये धनुर्वेदप्रकरणे प्रथमः पादः।' (आ) द्वितीय पाद में धनुर्दानविधि, काल, शिष्य-परीक्षा, आचार्यलक्षण आदि का विचार है तथा अन्त में लिखा है—'इति धनुर्दीक्षाविधिः।' (इ) तृतीय पाद में सामान्यश्रम-क्रिया, लक्ष्यास्खलन, शीघ्र सन्धान, दूरपाति, दृढचतुष्क, हीनगति, लक्ष्यस्खलन-विधि, शुद्धगति, बाणभङ्ग आदि का विचार किया गया है। (ई) चतुर्थ पाद में शस्त्रघटन, शस्त्ररक्षा, शस्त्रवारण, शकुन, व्यूह आदि का विचार है तथा अन्त में लिखा है—'इति श्रीमान् महाराजाधिराज वीरविक्रमादित्य-संगृहीते वीरेश्वरीये धनुर्वेदप्रकरणे चतुर्थः पादः समाप्त।'

(ख) द्वितीय भाग छह विभागों (अध्यायों) में विभक्त है। प्रथम से षष्ठ अध्याय तक क्रमशः धनुर्लक्षणसूचना, धनुःशास्त्रीय मन्त्रावतार, बाणविक्षेपगुण, शकुन, धनुर्धारण तथा दिक्पाल का विचार किया गया है और अन्त में लिखा है—'इतिश्री भूभृद्दिलीपविरचिते कोदण्डशास्त्रे दिक्पालपूजाविधिमन्त्रोद्देशाध्यायः षष्ठः समाप्तः।

(ग) तृतीय भाग का विभाजन नहीं है। इस भाग में शस्त्रविधि, व्यूह आदि का विचार किया गया है तथा अन्त में लिखा है—'इतिश्रीसदाशिवप्रोक्ता धनुर्विद्या समाप्ता।'

(घ) चतुर्थ भाग का भी विभाजन नहीं है। इस भाग में धनुर्धर-प्रशंसा, धनुर्दान, धनुर्धारणविधि, धनुःप्रमाण, गुणलक्षण, फललक्षण, गुणमुक्तिलक्षण, धनुर्मुष्टिलक्षण लक्ष्यलक्षण, शरलक्षण, अनध्याय, क्रियाकलाप, श्रमक्रिया, लक्ष्यसञ्चलनविधि, शीघ्रसाधन, दूरपातित्व, दृढप्रहारता, हीनगति, धनुर्गति, शब्दभेदी, शस्त्रवारण संग्रामविधि, अक्षौहिणी, व्यूह, युद्ध आदि विषयों पर विवेचन किया गया है तथा अन्त में, 'इतिश्री सदाशिवप्रोक्तो धनुर्वेदः समाप्तः' लिखा है।

(ङ) पञ्चम भाग का विभाजन परिच्छेद के रूप में किया है। यह भाग केवल तृतीय परिच्छेद का खण्डित अंश है तथा इसमें धनुर्विक्षेप का विचार किया गया है। भागान्त में लिखा है—'इतिश्री भूभृद्दिलीपविरचिते धनुःशास्त्रे विक्षेपगुणपारधी-विचारनामकस्तृतीयः परिच्छेदः समाप्तः।' खण्डित होते हुए भी यह ग्रन्थ अनुसन्धेय है।

प्रथम परिशिष्ट

अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ

[ग्रन्थों के सामने कोष्ठकों में अंकित संख्याएँ विवरणान्तर्गत क्रम-संख्याएँ हैं।]

क्रम-सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	र०का०	लि०का०	विशेष
१.	अद्वैतलक्षणचन्द्रिका (१०४)	दर्शन (वेदान्त)	×	×	खण्डित
२.	अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारण-भावः (११५)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	×	
३.	अनुमितेर्मानसत्वनिराकरण (१११)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	×	
४.	अनेकार्थध्वनिमञ्जरी (५६)	काव्य	×	×	खण्डित, लिपिकार–मत्त गजराज
५.	अवच्छेदकावच्छेदनानुमिति-विचार (११०)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	×	खण्डित
६.	आख्यातरहस्य (२३७)	व्याकरण	×	×	खण्डित
७.	आख्यातवाद (२३८)	व्याकरण	×	×	खण्डित
८.	इतिहाससमुच्चय (२०८)	इतिहास	×	१६३८ वि०	लिपिकार–चतुर्भुज शर्मा
६.	उड्डीशतन्त्र (१६८)	आगम (तन्त्र)	×	×	खण्डित
१०.	कर्मविपाकसंहिता (२१२)	पुराण	×	१६७४ शकाब्द	लिपिकार–रघुनन्दन; लिपि–मैथिली (तालपत्र)
११.	कालनिर्णयदीपिका (१४१)	धर्मशास्त्र	×	×	खण्डित
१२.	कालाग्निरुद्रोपनिषद् (२६१)	उपनिषद्	×	×	लिपिकार–लालजीदास
१३.	काशीखण्ड–कथा-संग्रह (२१४)	पुराण	×	×	खण्डित
१४.	काशीखण्ड-कथा संग्रह (२१५)	पुराण	×	×	खण्डित

क्रम-सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	र०का०	लि०का०	विशेष
१५.	गणेशखण्ड (२१७)	पुराण	×	१२८५ फसली	लिपिकार–देवशर्मा
१६.	गौरीशङ्करप्रतिष्ठाविधि (१५४)	कर्मकाण्ड	×	×	
१७.	तत्त्वचिन्तामणिदीधिति-प्रकाश (१०७)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	४७७ लक्ष्मण सं०	लिपिकार–परमानन्द, खण्डित; लिपि–मैथिली (तालपत्र)
१८.	त्रिविधाद्भुत सागर-सार (२०५)	पुराण	×	×	खण्डित
१९.	देवीगीता (२१८)	पुराण	×	×	लिपिकार–काशीनाथशर्मा
२०.	दौर्गासिंहीय वृत्ति (२३९)	व्याकरण	×	×	खण्डित
२१.	दौर्गासिंहीय वृत्ति (२४०)	व्याकरण	×	×	खण्डित
२२.	धर्मप्रवृत्ति (१४२)	धर्मशास्त्र	×	×	खण्डित
२३.	धर्मशास्त्रनिबन्ध (१५५)	धर्मशास्त्र	×	×	खण्डित, लिपि–मैथिली (तालपत्र)
२४.	नरसिंहपुराण (२०४)	पुराण	×	×	
२५.	नलोदयकाव्य-टीका (५९)	काव्य	×	×	लिपिकार–जगदीश
२६.	नृसिंहतन्त्र (१९३)	आगम (तन्त्र)	×	×	
२७.	न्यायसिद्धान्तमञ्जरी (१०८)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	×	
२८.	न्यायादर्श (१०९)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	×	
२९.	पदार्थतत्त्व (१०५)	दर्शन	×	×	खण्डित
३०.	पिङ्गलसार (२५०) (सारविकाशिनी टीका)	छन्दःशास्त्र	×	×	खण्डित
३१.	प्रामाण्यवाद (११६)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	×	
३२.	बिहारी सतसई (संस्कृत-टीका (५४)	काव्य	×	×	खण्डित
३३.	ब्रह्मवैवर्त्तपुराण (कृष्ण-जन्म खण्ड) (२०३)	पुराण	×		

क्रम-सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	र०का०	लि०का०	विशेष
३४.	भगवद्भक्तिरत्नावली (२०७)	पुराण	×	१८५० वि०	लिपिकार—श्यामदास
३५.	भैरवतन्त्र (मन्त्र-संकेत-संग्रह) (१९४)	आगम (तन्त्र)	×	×	
३६.	मन्त्रतन्त्रकोष्ठक-चिन्तामणि (१८३)	आगम	×	×	खण्डित
३७.	महाभारत ज्ञानदीपिका टीका (२१३)	पुराण	×	१७४१ वि०	खण्डित; मैथिली (तालपत्र)
३८.	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड (१७३)	ज्यौतिष	×	१९१० वि०	लिपिकार—उजागरशर्मा
३९.	योगवासिष्ठसार (१२५)	योग-दर्शन	×	×	
४०.	योगवासिष्ठसार (१३०)	योग दर्शन	×	१८६३ वि०	लिपिकार—हरिकृष्ण
४१.	राधाभक्तिमञ्जूषा (२०६)	पुराण	×	×	
४२.	रोगदर्पण (२५५)	आयुर्वेद	×	×	खण्डित
४३.	वर्णभैरवतन्त्र (२०१)	आगम-शास्त्र	×	×	
४४.	वाक्यसुधाटीका (९३)	दर्शन	×	×	खण्डित
४५.	वीरतन्त्र (भैरवीतन्त्र) (१९०)	आगम (तन्त्र)	×	१७२९ वि०	लिपिकार—नीलकण्ठ
४६.	वीरभद्रमहातन्त्र (१८८)	आगम-शास्त्र	×	×	खण्डित
४७.	वैयाकरणभूषण-परीक्षा टीका (२२८)	व्याकरण	×	×	खण्डित
४८.	व्युत्पत्तिवाद (११२)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	×	खण्डित
४९.	शक्तिवाद (११४)	तर्कशास्त्र	×	×	खण्डित
५०.	शारदातिलक (१९६)	आगम	×	×	
५१.	शारदातिलक (२००)	आगम	×	१९१३ वि०	लिपिकार—उजागर शर्मा
५२.	श्रीमद्भागवत गद्यानुवाद (२१६)	पुराण	×	×	खण्डित, बँगला-लिप्यन्तरण
५३.	सन्निकर्षनिरूपण (११७)	तर्कशास्त्र	×	×	खण्डित
५४.	समासवाद (२२७)	व्याकरण	×	×	खण्डित

क्रम-सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	र०का०	लि०का०	विशेष
५५.	सरोजसुन्दर (१६०)	कर्मकाण्ड	×	१८५०वि०	
५६.	सांख्यसूत्रवृत्ति (६६)	सांख्य-दर्शन	×	१६६८ वि०	लिपिकार—हरिकृष्ण
५७.	सूर्यसिद्धान्त (१८४)	ज्यौतिष	×	१८५५ वि०	लिपिकार—उमापति
५८.	स्फुट श्लोक-संग्रह (८७)	प्रकीर्ण काव्य	×	×	
५६	स्मार्त्तोल्लास (१३८)	धर्मशास्त्र	×	×	खण्डित
६०.	स्वरोदयशास्त्र (१२१)	दर्शन	×	×	
६१.	हरिहर पारायण (६३)	काव्य	×	१८८८ वि०	खण्डित

द्वितीय परिशिष्ट

क. ग्रन्थों की अनुक्रमणिका

[ग्रंथों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम-संख्याएँ हैं।]

ख. मिथिलाक्षर में लिखित ग्रंथों की अनुक्रमणिका

(ग्रन्थों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम-संख्याएँ हैं।)

ग. वंगाक्षर में लिखित ग्रन्थों की अनुक्रमणिका

[ग्रन्थों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम-संख्याएँ हैं ।]

घ. ताल-पत्र पर लिखित ग्रन्थों की अनुक्रमणिका

[ग्रन्थों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम-संख्याएँ हैं ।]

ङ. ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका

[ग्रन्थकारों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई ग्रन्थ-संख्या की क्रम-संख्याएँ हैं ।]

तृतीय परिशिष्ट

महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज-विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
१	अनुभूति-स्वरूपाचार्य	१. सारस्वत प्रक्रिया		१६६२ वि०	४१	आ० शा० भं० जै० ग्रं० क० प्रा० ता० ग्र० सू०	२ १०१, ६६८, १११, ११२ (पृ० सं० ११४)	बालबोधिनी टीका-सहित, टी० का० पं० मिश्र वासव। कन्नड़- लिपि में लिखित।
						जै० सि० भ०, आ० सू०	छ० जं० ५१०, ५१८, ५४०	
				१८०३ वि०		रा० जै० शा० भ०, ग्र० सू०; भाग २	दि० जै० मं० लूणकरजी पांड्या (भरतपुर) के ग्रं० सं०—२६, प्रति सं०—२६८	
						रा० जै० शा०, भ० ग्रं० सू०; भाग २	दि० जै० मं० बड़ा-तेरह पथियों के (जयपुर) ग्रन्थ ग्रं० सं० १११, प्रति सं० १५४४, वेष्टन-सं० २०२६	

		१६२२ वि०	सिंघी जैन सीरीज़ नं० ३७, भाग–४	ग्रं० सं०–११	पुंजराज कृत-टीका, टीका-काल—१४७५ ई० से १५३० ई० के बीच। अडयार लाइब्रेरी बुलेटिन, भाग ५, खण्ड ३ पृष्ठ० १–५ पर आधृत।
		१६५७ वि०	सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ, भा० वि० भ० बम्बई		
		१६४३ वि०	डि० कैट० ऑफ सं० सै०	६६० से ६७७ तक	६७३ संख्याक ग्रन्थ ओड़िया-लिपि में लिखित।
		१८४६ वि०	इन् दि अडयार लाइ०,		
		१६७५शका०	भाग ६		
		१६४२ वि०	न्यू० कैट० कैटलो०, यू० म०	पृ० सं०—१५८	
		१८६३ वि०	आ० श० भं० ज० ग्रं०	पृ० १४१	
		१८४२ वि०	,,	,, १४२	
		१८४१ वि०	,,	,, १४३	अनेक विवरण-सहित।
		१८२१ वि०	,,	,, १४४	
		१७७६ वि०	,,	,, १५४	
		१८२८ वि०	,,	,, १६६	
		१८४० वि०	,,	,, १४७	
		१८७३ वि०	,,	,, १४८	
			,,	,, १४९	इसके लिपिकार ने महाराजा दौलतराव सिंधिया का उल्लेख किया है।
			,,	,, १५०	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
१	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१. सारस्वत प्रक्रिया		१६२७ वि०		वि० रा० भा० प०	१ खं० (सं०) १२, ३१, ५	
				१६२८ वि०		,,		
				१८७६ वि०			५ खं० २३१, २४७.	
२	कालिदास (कवि)	१. रघुवंश				सी० सी० पार्ट १	पृ० ४८६	
					१०५	सी० सी० पार्ट २	पृ० ११३ २११	
						सी० सी० पार्ट ३	पृ० १०४	
						सी० एस्० सी० भॉल्यू० ६,	पृ० ७६	
						ए० सी० पार्ट १	पृ० ११७	
						ट्री, कैट० भॉल्यू० ३	पृ० २७७३	
						एच्० पी० एस्० पार्ट १	पृ० २१ (१६०५)	
						बी० एम्० (१६०८)	६२८१	
						सी० पी० बी० पी०	३६८	

						देस० खं० ६६ सं० बि० रि० सो० डि० कैट० मैन० इन मिथिला खं० २, डि० कैट० ऑफ० मं० मैं० इन् दि अ० ला० खं० ५ पृ० ७०–१००,	११६३६–७६ ग्रं० सं० ११४, A. B., पृ० सं० ११८ ग्रं० सं०--२०५--२६१ (८६ ग्रंथ)	इस संग्रह में आन्ध्र और द्रविड़ भाषा की टीकाएँ हैं और तमिल, तेलुगु एवं कन्नड-लिपियों में लिखित पाण्डुलिपियाँ हैं।
						क० प० ता० ग्रं० सू० सिंघी जैन सीरीज नं० ३७ (श्रीबहादुर सिंघ सिंघी मेमोरीज़ खं० ४) स्टडीज़ इन इंडियन लिट्रूरी हिस्ट्री, भाग–१	पृ० १३०–१३१, ग्रं० सं० १५५ (प्र० सं० १२७), २४० (प्र० स० १२८), ३४६ (प्र० सं० १२६), ४६६ (प्र० सं० १३०), ५५७ (प्र० सं० १३१) पृ० सं० ३०६ (ले० सं० ४६)	

क्रम-संख्या	ग्रंथकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
२.	कालिदास (कवि)	२. ऋतु-संहार			८	सी० सी०, ख०–१	पृ० ७३	
						,, ख०–२	पृ० १४	
						,, खं०–३	पृ०–१६	
						बी० एम्–१६०८	पृ०–२७५	
						सी० पी० बी० पी०	पृ०–५५	
						ब्रि० रि० सो० (डि० कैट० मैन० इन् मि०) खं० २	पृ०–२०, २१, ग्रं० सं०–२०, ए०	दोनों पाण्डुलिपि क्रमशः पं० शिव दत्त झा बरारी, परसामा, भागलपुर और पं० मार्कण्डेय मिश्र, चेनौर, मनिगाछी, दरभंगा के पास संगृहीत है।
						डि० कै० ऑफ सं० मै० इन् दी अ० ला० खं० ५	पृ०–१४६, ग्रं० सं० ४५४	
		३. कुमार-सम्भव			२७	सी० सी० खं० १	पृ० ११०	
						,, खं० २	पृ० २२	
						,, खं० ३	पृ० २४	
						सी० एस० सी० भाग–६	पृ० १४	
						ए० सी० खं० १	पृ० ११०	
						एच्० पी० एस्० भाग–१ (१६०५)	पृ० १२	
						बी० एम्० (१६०८)	पृ० २७५	

			१६६१ शकाब्द			सी० पी० बी० पी० ८६ डेस० खं० ६६	सं० ११४६४	
						बि० रि० सो० (डि० कैट० ऑफ मैन० इन् मि०) भाग–२*	पृ० २८, ग्रं० सं० २६, ए०, बी०	* पाण्डुलिपियाँ क्रमशः पं० वासुदेव झा, बरही, नौहट्टा, भागलपुर; पं० बाबुजन झा, शासीपुर, जोगियारा, दरभंगा और फूल झा, बरारी, परसामा, भागलपुर के पास संकलित हैं।
			१६५४ ई०			डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् अ० ला० खं० ५	पृ० १६–२३, ग्रं० सं० ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५,	
३.	कालिदास (मिश्र) (मिथिलावासी)?–	१. नलोदय काव्य			२३	सी० सी० खं०–१	पृ० २८०	
						” ”–२	पृ० ६०, २०७	
						” ”–३	पृ० ६०	
						सी० एस्० सी० भाग–६	पृ० ३२	
						ट्री० कैट० भाग–३	पृ० ३७, ३८	
						बी० एम० (१९०८	पृ० २८६	
						सी० पी० बी० पी०	२२७	
						डिस० ६६	सं० ११८४३	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
				१६८२ शकाब्द= ल० सं० ६५३= १८११ वि०, ६७७ लं० सं०		ग्रि० रि० सो० (डि० कैट० ऑफ मै० इन्० मि०) खं० २* डि० कै० ऑफ् सं० मै० इन् दि अ० ला० खं० ५	पृ० ६६, ६७, ग्रं० सं० ६३, ए०, बी० पृ० १७५–१७८, ग्रं० सं० ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३६, ५४०, ५४१	*पाण्डुलिपियाँ क्रमशः—१. पं० आदित्यनाथ मिश्र, पहिटल, मनिगाछी, दरभंगा; २. पं० यदुनन्दन ठाकुर, सरबसिया, झंझारपुर, दरभंगा; ३. पं० वासुदेव मिश्र, सलेमपुर, घटाहो, दरभंगा, के पास सुरक्षित हैं।
४.	कौण्डुभट्ट*	१. वैयाकरण भूषण-सार	१८वीं शती		१६	डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दी० अ० लाइ० भाग–६	पृ० २१४—२१८, ग्रं० सं०–५६०–५७३ (तेरह प्रतियाँ; तेलुगु तथा अन्य दक्षिणी लिपियों में)	*रंगोजिभट्ट के पुत्र और प्रसिद्ध भट्टोजिदीक्षित के भ्रातृव्य, वैयाकरणभूषणसार के मंगलाचरण में—"वाग्देवी यस्य जिह्वाग्रे नरीनर्त्ति सदा मुदा। भट्टोजिदीक्षितमहं पितृव्यं नौमि सिद्धये ॥३॥"—स्पष्ट नामोल्लेख किया है। न्यू० कै० कैट०, पृ० म० १६४६ पृ० सं० ३०२, ३०३।
				१८३० वि० १६३८ वि०		प्रा०ह०लि०पो० का खो०वि० (वि०रा०भा०प०,पट०)खं० ५	पृ० २६, ग्रं०,सं० २३२ २३५, २४१	
५.	गदाधर भट्टाचार्य	१. विषयता-वाद	१७वीं शती		१६	डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दि० अ० लाइ० भाग–२	पृ० १०७ ए०, ११० ए० १११ ए०	

		२. आचार्यानुमानरहस्य				मिथिला मैन०	६५६०, ६७५७	*ग्रंथकार के अन्य—अवच्छेदकतालक्षण, अवच्छेदकतावाद, अवच्छेदकत्वनिरुक्ति रहस्य, अवच्छेदकानुगमकवाद—चार ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं। दे० न्यू कैट० कट० यू० ऑफ् मद्रास १९४९, पृ० सं० ३०३ और मैसूर—पृ० ३८१।
		३. पक्षता-गदाधरी				मैसूर मैन० १	पृ० ३७३ (२ प्र०), ३८१ (४ प्र०)	
		४. परामर्श गदाधरी*				नासिक खं० २	पृ० ३३=१२ प्रतियाँ	
						प्रा०ह०लि०पो० का खो०वि० (बि०रा०भा०प०,पट०)खं० ५	पृ०सं० १४, ग्रं०सं० ११३, ११८, १२३, १२७ †	†इस विवरण में ग्रंथकार के अन्य चार ग्रन्थ हैं।
६	जगदीश*	१. अवच्छेदकता विचार			५६	डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दि ग्र० ला० भाग २	पृ० ११२ बी०, ११३ बी०—२ ग्रं०; वेन—१५०, १५५, १६६; कैट० ३, २३३, २३६, २५०, २५५—५८, २६१, २६६ (फ्रे०) एच्—जेड् ६६५	* ग्रंथकार के अवच्छेदकतानिरुक्ति नामक ग्रंथ की 'अवच्छेदकतानिरुक्तिपत्र' नामक टीका की पाण्डुलिपि खोज में मिली है। दे० ए डिस्क्रिप्टिव कैटलाग ऑफ् दि संस्कृत मैनस्क्रिप्ट इन् दि गवर्नमेंट ओरियण्टल मैनस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, मद्रास।

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खोज० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
		२. सव्यभिचार टीक				मिथिला, मैसूर १	पृ०—३८२	ग्र० सं०—४२३६ ।
		३. हेत्वाभास सामान्य-निरूपण						
		४. पक्षता-विचार				ओफर्ट–II	३५७६	
		५. व्यधिकरण-विचार				पेजवार	३९	
		६. व्याप्ति-पञ्चक				फेह	१३	
						प्रतिवादिभयङ्कर बी०	१०, ३६०	
						एस्० के० राय	५३१	
						एस्० एस्० पी० सी० १ए	३४०, ३६०, ३६७, ३८०, ३९१, ३९४,	ग्रंथकार का 'अवच्छेदकता निरुक्तिक्रोडपत्र' नामक ग्रंथ भी खोज में मिला है ।

							४०२, ४२३, ४२८, ४३२, ४३५, ४३७, ४६७, ४७०, ४७२, ५००, ५१०, ५३२, ५५४, ५६६,	दे०--डि० कैट० ऑफ सं० मैं० इन दि अ० लाइ० II पृ० १२१ बी०, एस्० के० राय—११६, ६२०, ६२१, ६३५; वेरेन्द्र-१३४, ८५७
						एस्० एस्० पी० सी०IIIके०	४५, १८४,	
						वंगीय	पृ० २४८	
						वेरेन्द्र	८६१, ८६४, ११७६ सी०	
						एडिन० कामी० सेक्ट० सेट०	६४, १६३२	
						सी० एच० जेड	१३८४	
						प्रा० ह० लि० पो० का खो० वि० खं० ५ (वि० रा० भा० प०, पट०)	१३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६,	
७.	जयदेव	१ गीत-गोविन्द	प्रसिद्ध		३२	सी० सी० पार्ट० १	पृ० १५३	
						,, पार्ट० २	पृ० ३१	
						,, पार्ट० ३	पृ० ३३	
						सी० एस्० सी० खं० ६	पृ० २०–२१	
						ए० सी० पार्ट १	पृ० १४	
						एच्० पी० एस्० खं० १ (१६०५)	पृ० १६	
						बी० एस्० (१६०८)	पृ० २·३	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो॰ वि॰ ग्रं॰	ग्रं॰ सं॰	
				१७०५शका॰		सी॰ पी॰ वी॰ पी॰ देस खं॰ ६६	१२५ सं॰—११६३७	
				१७६६शका॰ १२५५फसली १२२२फसली १२१२फसली १७८७शका॰ ५३२ लं॰सं॰		डि॰ कैट॰ ऑफ् मै॰ इन् मि॰ खं॰ २	पृ॰ ३६–५१, ग्रं॰ सं॰—३६, ३६ ए*—एल्॰ (बारह प्रतियाँ)	*बिहार रिसर्च-सोसायटी को इसकी टीकाओं (बालबोधिनी—चैतन्य-दास, सारदीपिका—जगद्धर, गीतगोविन्द व्याख्या (गङ्गा)—कृष्णदत्त, शंकर मिश्र और नारायण भट्ट) की सात पाण्डु-लिपियाँ प्राप्त हुई हैं। चैतन्य-दासकृत बालबोधिनी टीका का उल्लेख अन्य खोज-विवरणों में भी हुआ है।—दे॰ सी॰ सी॰ पार्ट १, पृ॰ १५४, पार्ट २, पृ॰ १६७, पार्ट ३ पृ॰ ३३, बी॰ एम्॰ (१६०८) पृ॰ २५२।
						डि॰ कैट॰ ऑफ् सं॰ मै॰ इन् दि अ॰ ला॰, खं॰ ५	पृ॰ सं॰ ३४४–३५५, ग्रं॰ सं॰ १०२१–१०४८ (५ तेलुगु, २ उड़िया, १ मलयालम और १ बँगला लिपि में लिखित)	

					प्रा० ह० लि० ग्रं० खो० वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० १०, ११, ग्रं० सं० ८०, ८२, ६१	जगद्धर-कृत 'सारदीपिका' टीका (१६८१ वि०)—की अन्यंत्रोपलब्ध प्रतियाँ—सी० सी० पार्ट २, पृ० ३१, १६७, पार्ट ३, पृ० ३३ १५३१ वि० में रचित कृष्णदत्त-कृत गंगा टीका की अन्यत्रोपलब्ध प्रतियाँ। दे० सी० सी० पार्ट १, पृ० १५८, पार्ट २ पृ० १६७, पार्ट ३ पृ० ३३। १७५८ शकाब्द में लिखित श्री शंकरमिश्र कृत टीका की पाण्डुलिपियों की अन्य खोज-विवरणों में चर्चा हुई है। दे० सी० सी० पार्ट १, पृ० १५४, पार्ट २, पृ० ३१, १६७, पार्ट ३, पृ० ३३, सी० एस्० सी० खं० २, पृ० २०, बी० एम्० (१६०८) पृ० २५२। ४८६२ शकाब्द (१७३७ वि०) में लिखित नारायणभट्ट-कृत टीका की पाण्डुलिपियों का अन्य खोज-विवरणों में उद्धरण :—पी-सी०

क्रम-संख्या	ग्रंथकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
								पार्ट १ पृ० १५४, पार्ट २, पृ० ३१, १९८, पार्ट ३, पृ० ३३, डी० एम्० (१९०८) पृ० २५२।
		२. रामगीत (?)*						*रामगीत के ग्रन्थकार गीतगोविन्दकार जयदेव से भिन्न कोई अन्य जयदेव हैं। विवरण में ग्रन्थकार के रूप में जयदेव का उल्लेख हुआ है, किन्तु किसी अन्य खोज-विवरण में इस रचना की चर्चा नहीं है।
८	दण्डी*	१ दशकुमार चरित			२	डि० कैट० आफ् सं० मै० इन् दि, अ० लाइ०, खं० ५ प्रा० सं० ह० लि० पो० वि०, खं० ५ (बि० र० भा० प०, पट०)	पृ० २५७०, ग्रं० सं०—७४० ग्रं० सं० ८५	*इनके रचित 'काव्यादर्श' की दो पाण्डुलिपियाँ जैन साहित्यान्वेषकों को मिली हैं। दे०—क० प्रा० ता० प० ग्रं० सू०, पृ० सं०, १३६, (ग्रं० वं० ५५६)

								(प्र० सं० १३), ६१५ (प्र० सं० १४) २२५ (ग्रं० नं० १४०, प्र० सं० २)
९.	राम दैवज्ञ	१. मुहूर्त्त-चिन्तमाणि		शक सं० १८७१ „ १७४७ „ १७७५ „ १७४६	३१	वि० डि० कै० कैट० मि० गै०, खं० ३ सी० सी० कट० पट० ११ पट० ३ सी० पी० बी० पी० सी० एस्० सी०	 २६३, बी०, सी०, डी० आई पी० ४६२ पी० १०६, २१८ पी० ६६ ३७८ (स० ६५) ६	
				१७५३ वि०		प्रा० हस्त० लि० पो० का विवरण (खं० १)	सं० ग्रं० सं० १	दे० सं० १७४, २६४ और १७६ की टिप्पणी।
				१७६६ वि० १८४७ वि० १६१२ वि० १६७६ वि०		पाण्डुलिपियाँ-(हि० सा० स्०, प्र०; हि० सं० की ह० लि० पु० का वि० प०)	पृ० सं० २४६–२४८ (ज्यो० ग्रं० सं० २२६–२४३ = १७ प्रतियाँ)	
				१८७१ वि०		प्रा० सं० ह० लि० पो० का वि०, खं० ५ (ब्रि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० २०, ग्रं० सं० १८२	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
१०	नागेश*	१. वैयाकरण सिद्धान्त-मञ्जूषा	अठारहवीं शती		१.	प्रा० सं० ह० लि० पो० का खो० वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प० पट०)	पृ० सं० २४, ग्रं० सं० २२१	*नागेशभट्ट की दो रचनाएँ—'लघु शब्देन्दुशेखर' और 'परिभाषेन्दु-शब्दशेखर'—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन (प्रयाग) की खोज में मिली हैं। दे० 'पाण्डुलिपियाँ'—पृ० २०८, २१० (व्याकरण ग्रं० सं० १७, १६)
		२. परिभाषेन्दु-शेखर			२४.	डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दि अ० ला०, खं० ६	पृ० सं० १८२–१८७, ग्रं० सं० ५०२–५२४ (२३ प्रतियाँ)	
						प्रा० सं० ह० लि० पो० का खो० वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प० पट०)	पृ० सं०, ग्रं० सं० २३०	
		३. लघु-शब्दरत्न				प्रा० सं० ह० लि० पो० का खो० वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० २५, ग्रं० सं० २३०	

		४. परमलघु मञ्जूषा			४.	डि० कै० ऑफ् सं० मै० इन् दि ग्र० ला०, खं० ६	पृ० सं० १६६, १६७ ग्रं० सं० ४६९—४७१ (३ प्रतियाँ)	
						प्रा० सं० ह० पो० का खो० वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० २७, ग्रं० सं० २४२	
११	पतञ्जलि	१. महाभाष्य	प्रसिद्ध		३३	पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० स०, प्रयाग)	पृ० सं० २१० (क्र० स० ३३–३५, वे० सं० ६०७ (१४२५ ग्रं०), ६२२·१ (ग्रं० सं० १४०५·१), ६३८ (ग्रं० सं० १५१६ *	*हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग को खोज में ग्रंथकार की अन्य 'योगानुशासन' रचना मिली है। दे० 'पाण्डुलिपियाँ', पृ० सं० ४, क्र० सं० ३४, वे० सं०. ८०७, ग्रं० सं० १०८६।
						डि० कै० ऑफ् सं० मै० इन् दि० ग्र० ला०, खं० ६	पृ० सं० १४–१८ (ग्रं० सं० ४१–६८)†	†तेलुगु लिपि–४; नागरी लिपि–५; मलयाला लिपि–१ और अन्य लिपियाँ–१७।

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
				१८८५ वि०		का० ना० प्र० सभा का खो० वि० (विन्ध्यशिक्षा-वर्ष ४, अंक ३)	पृ० सं० ११६, (ग्रं० सं० ३०९)*	*पं० जमुनाप्रसाद नियनियां, रीवाँ (विन्ध्यप्रदेश) के पास सुरक्षित।
						प्रा० सं० ह० लि० पो० का० वि० (बि० रा० भा० प०, पट०) खं० ५	पृ० सं० २७ (ग्रं० सं० २४३, २४४)†	†बि० रा० भा० प० को खोज में ग्रंथकार का 'योगसूत्र' ग्रन्थ भी मिला है। दे० खो० वि०, खं० ५, सं० १५ (ग्रं० सं० १२८)
१२	भवभूति	१. मालती माधव‡	प्रसिद्ध		१३	सी० सी० पार्ट १ " पार्ट २ " पार्ट ३ सी० एस०सी० खं ६ ट्री० कैट० खं० ३ एच्० पी० एस्० खं १ (१९०५) बी० एम्० (१९०८) सी० पी० बी० पी०	पृ० सं० ४५३ पृ० सं० १०४ पृ० सं० ९८ पृ० सं० १६२ पृ० सं० २७७२ पृ० सं० ५६, ७४ पृ० सं० ९५ पृ० सं० ३७०	‡अड्यार लाइब्रेरी के संग्रहालय में कवि के अन्य ग्रन्थों की पाण्डुलियाँ सुरक्षित हैं। दे० डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दि अ० लाइ० भाग ५।

						डि० खं० १०१	सं० १२५८६	
						डि० कैट० ऑफ् मै० इन् मि० खं० २ (ब्रि० रि० सो०, पट०)	पृ० सं० ११ (ग्रं० सं० १०७, १०८)	
						प्रा० सं० ह० लि० पो० का खो० वि० खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० १०, ग्रं० सं० ७७	
		२. महावीर चरित	प्रसिद्ध		६	डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् द० अ० ला० खं० ६*	पृ० सं० ४६५–४६६ (ग्रं० सं० १४४८—१४५२ = ५ प्रतियाँ	*तेलुगु-लिपि—२ देवनागरी—३
				१६७० वि०		प्रा० सं० ह० लि० पो० का वि० खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० ११, ग्रं० सं० ६०	
१३	भट्टोजि-दीक्षित	१. सिद्धान्त कौमुदी-	प्रसिद्ध		५८	डि० कैट० ऑफ सं० मै० इन् दि० अ० ला०, खं० ६	पृ० सं० ६३—७७ (ग्रं० सं० १७८–२४१)†	†तेलुगु-लिपि –१६ पाण्डुलिपियाँ मलयालय – ३ ,, देवनागरी – ४ ,, अन्य –३६ ,,

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खोज० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
				१६८५ वि०		पाण्डुलिपियाँ (हिं० सा०	पृ० सं० २१६—२२१*	*वेष्टन एवं ग्रं० सं०–६०२ (१४१४)
				१८१७ वि०		स०, प्रयाग)	क० सं०--१२३—१५०	,, ,, १८४३ (३५६६)
				१८२२ वि०				,, ,, ६२० (१४६७)
				१८२२ वि०				,, ,, ६२० (१४६७)
				१८२२ वि०				,, ,, २४६७ (२७०६)
				१६८५ वि०				,, ,, ६०२ (१४१०)
				१६८५ वि०				,, ,, ६०२ (१४११)
				१७६३ वि०		रा० जैं० शा० भं० ग्रं०	पृ० सं०, २६४ और	,, ,, ६१५ (१४४६)
				(पृ० सं०		सू० भाग २	४१४ (ग्रं० सं० १५७४–	,, ,, ६३० (१५०१)
				१५७६)			१५८५ और वे० सं०–	,, ,, ६३० (१५०२)
				१७३२ वि०			२०५६—२०६८ और	,, ,, ६०३ (१४१५)
				(प्र० सं०			२२०१–२२०२)	,, ,, १८०४ (३४१८)
				१५८०)		प्रा० सं० ह० लि० पो०	पृ० सं० २५, ग्रं० सं०	,, ,, ८६५ (१२५५)
						का वि० खं० ५ (वि० रा०	२२६	,, ,, ८७६ (१२६०)
						भा० प०, पट०)		,, ,, ६२२ (१४७४)
								,, ,, ६३३ (१५१२)

							,, ,, ६६८ (१६६२)
							,, ,, १०४० (१६३६)
							,, ,, १०४७ (१६४३)
							,, ,, १०५६ (१६५५)
							, ,, १४४० (२४८५)
							,, ,, १५६७ (२६६६)
							,, ,, १५६७ (२६६८)
							,, ,, १७३५ (३३३६)
							,, ,, १८१० (३४१०)
							,, ,, १८२१ (३६६६)
							,, ,, १६८० (३८७३)
							,, ,, ७७० (६४१)
							(१७०५ वि० में लिखित)
	२. शब्द-कौस्तुभ	प्रसिद्ध		२६	डि० कै० ऑफ़् सं० मै० इन् दि अ० ला० खं० ६,	पृ० सं० ३१—३५; ग्रं० सं० ११२–१३२	२० प्रतियाँ—तेलुगू–१०; देवनागरी–३; अन्य–७।
					पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० स०, प्रयाग)	पृ० सं०–२१२, क्र० सं०५६–५७ (वेष्टन एवं ग्रं० सं० ८८६ (१३४१), १०८१ (१६७८)	

क्रम-संख्या	ग्रंथकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
						रा० जै० शा० ग्रं० सू० भाग २	पृ० सं० २६८ और ४१४ (ग्रं० सं० १६२४, वेष्टन-सं० १६८४)	
						प्रा० सं० ह० लि० पो० का वि० खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० २५, ग्रं० सं० २२६, २३३, २३६,	
		३. प्रौढ मनोरमा	प्रसिद्ध		४३	डि० कैट० ग्राफ़् सं० मै० इन् द श्र० लाइ० खं० ६	पृ० सं० ७८–८७; ग्रं० सं० २४३ – २८० = ३७ प्र०*	*तेलुगु लिपि— ८ प्रतियाँ देवनागरी — १४ ,, मलयाला — १ ,, अन्य —१४ ,, = ३७ प्र०
				१७०० वि०		पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० स०, प्रयाग)	पृ० सं० २०६, क्र० सं० २२–२६ (वेष्टन एवं ग्रं० सं० ६१७ (१४५३), ६३० (१५००), ६२६ (१४८६), ७०७ (७६३), १२१६ (१८१५)	

				१६१० वि०		प्रा० सं० ह० लि० पो० का वि०, खं० ५ (ब्र० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० २७, ग्रं० सं० २४५
१४	भानुदत्तमिश्र	१. रस-पारिजात	तेरहवीं शती		३५	डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दि अ० ला० खं० ५	पृ० सं० ५६५–५७२, ग्रं० सं० १७६६·१८१६ (१७ प्रतियाँ)
		२. रस-तरङ्गिणी				रा० ला० मि०—सै० मैन, खं० ८	सं० ३३७
		३. रस-मंजरी	बारहवीं शती	१२७८ फसली	३७	सी० सी० पार्ट १	पृ० ४६४
						,, ,, २	,, ११५
						,, ,, ३	,, १०६
						आर० एम्० पार्ट ३	,, ३११
						,, ,, ६	,, ११७
						सी० एस्० सी० खं० ७	,, २३–२५
						डेस० खं० २२	सं० १२·२८
						ट्री० कै० खं० ३	पृ० ३१७१
						सी० सी० पार्ट १	पृ० ४६५
						,, पार्ट २	पृ० ११६, २२०,
						,, पार्ट ३	पृ० १०५, १०६

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
						एच्० एस्० पी०, खं० १ (१६०५)	पृ० ३२	
						सी० पी० बी०	पृ० ४०५	
						डेस० ख० २२	सं० १२६३५	
						रा० ला० मि०, खं० ५	पृ० २२६	
						डिस० कैट० ऑफ् मैन० इन मिथि० (बि० रि० सो०; प० (खं० २	पृ० सं० ४८–५६, ग्रं० सं० ३६, ए—जी, ३ , ३८, ए–पी०, ३६, ४०, ४१, ए=२६ प्रतियाँ।	
						प्रा० सं० ह० लि० प० का वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पटना)	पृ० सं० ७, ग्रं० सं० ६७, ६८	
१५	भारवि	१. किराता-र्जुनीयम्	प्रसिद्ध		३३६	सी० सी० पार्ट १	पृ० १०१	
						,, ,, २	,, २१–१६४=१७४ प्र०	
						,, ,, ३	,, २३	

					सी० एस० सी० खं० ६	पृ० १३	
					ए० सी० पार्ट १	,, ११०	
					एच्० पी० एस्० खं० १ (१९०५)	,, १३	
					बी० ए० (१९०८)	,, ८७	
					सी० पी० बी०	,, ८५	
					डेस० खं० २	सं० ११६४—७९	
			१४३८ शकाब्द		डिस्० कैट० आफ् मैं० इन् मि० खं० २ (बि० रि० सो०, पट०)	पृ० २३-२६, ग्रं० सं०-२३, ए-एफ्, २४, २५=६ प्रतियाँ	
			१७२१ श० १७४१ '' ४७६ ल० सं० १७४८ वि०		डिस० कैट० ऑफ् सं० मैन० इन् दि आ० ला०, खं० ५	पृ० सं० ४—१५* ग्रं० सं० २९=२३ प्रतियाँ	*देवनागरी-३; तेलुगु-१५; मलयाला-२; बंगला-१; अन्य-२ ।
					रा० जै० शा० भं० ग्रं० सू० भाग २	पृ० सं० २४, २४४, ग्रं० सं० २२, १२०, क्र० सं० २५३, २५४, १३५४-५६ वेष्टन सं० २६१, २६, २६८, २६९, २७० ।	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
				१६५३ वि०		पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० स०, प्रयाग)	पृ० सं० ३३२–३३३, ग्र० सं० १–१८*	*वेष्टन एवं ग्रं० सं० -१०४४ (१६४०), ७७७ (६६६), १५६१ (३०७५), ८५० (१२१३, १५८६ (३०५७), १२८ (१३५', ६९६ (६७५)' ७०६ (७७४), ७५८ (८७६) १६१३ (३१३३) १६४१ (३२४७), १८११ (३४२५), १८४२ (३५४०), १८४३ (३५४१), १८४७ (३५५१), १६३७ (३७०७), १६४४ (४०६३), १६४२ (४०८८)। अन्तिम ग्रंथ आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी रचित 'किराताजु'नीय-भाषा' की पाण्डुलिपि है।
				१८६१ वि०				
				१८८० वि०				
				१८८४ वि०				
				१६१७ वि०		प्रा० सं० ह० लि० पो० का वि०, खं० ५ (वि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० १०, ग्रं० सं० ८१	

१६	महीधर	१. मन्त्र-महोदधि २. बृहज्जातक		१७७९ वि०	१९	सी० सी० पार्ट १ " " २ " " ३ आर० एम्० पार्ट ७ सी० पी० बी० पी० सी० एस्० सी० ६	पृ० ३७५* " ८४, २१३ " ८ " २११ ३०९ सं० ७८	* ग्रंथकार की 'बृहत्संहिता' रचना की पाण्डुलिपि बिहार-रिसर्च-सोसाइटी को खोज में मिली है। दे० डि० कै० ऑफ् मै० इन् मि० भाग २, पृ० सं० २६६, ग्रं० सं० २२३।
						डि० कैट० ऑफ् मै० इन् मि० भाग २, (बि० रि० सो०, पट०)	पृ० सं० २५४, ग्रं० सं० २२२, ए०, बी०	
			१६४६ वि०	१८१३ वि० १८७६ वि०		पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० स० प्र०,†	पृ० सं० ४५८, क्र० सं० ५३ (वेष्टन एवं ग्रं० सं० २०३१, ४३६७) पृ० सं० ६४, क्र० स० ५४–५६ (वेष्टन एवं ग्रं० सं० ८३६, ११७३, ७२३, (८०७), ८०१ (१०५४)	† हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग को खोज में ग्रंथकार की एक 'मंत्रोद्धार' रचना मिली है। दे० पाण्डुलिपियाँ, पृ० सं० ४५८, क्र० सं० ५४। ग्रन्थकार-रचित यंत्र महोदधि-टीका भी उपलब्ध हुई है। १८३१ वि० में लिपि-कृत कश्चित् महीधर पंडित-रचित 'योगवासिष्ठ-विवरण' नामक रचना भी मिली है। दे० पाण्डुलिपियाँ, पृ० सं० २, क्र० सं० २९, वे० सं० ७७२, ग्रं० सं० ६५१।
				१८५९ वि०		रा० जै० शा० भं० ग्रं० सू० भाग २	पृ० सं० २७६, ग्रं०सं० १७१२, वेष्टन सं० १३०५	

क्रम-संख्या	ग्रंथकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
				१८८५ वि० १९१२ वि० १९१० वि०		प्रा० सं० ह० लि० पो० का वि० खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० १७, ग्रं० सं० १५०, ,, ,, २०, ग्रं० सं० १७९ ,, ,, २२, ग्रं० सं० १९९	* संभवत: 'कात्यायनीय परिशिष्टम् शुल्वसूत्रभाष्यम्' के तथा वेदों के भाष्यकार महीधर से भिन्न हैं। वेदभाष्यकार 'महीधर' की एक रचना 'भक्तिलता' बिहार-रिसर्च-सोसायटी को खोज में मिली है। दे० डि० कैट० ऑफ् मैन० इन् मि० खं०, २ पृ० सं० १००, क्र० सं० ७९। दे० गायकवाड़ ओरियण्टल सीरीज, खं० XCVI, पृ० सं० १४, कैट० ऑफ् मैन०, खं० २, ग्रं० सं० ५५।
१७	महेश ठाकुर (महामहोपाध्याय)†	१. तिथि-तत्त्वचिन्तामणि	प्रसिद्ध (१६५९-६० शकाब्द) १५६६ ई० में वर्त्तमान	१७९९ श० १७८६ श०	१८	डि० कैट० ऑफ् मैं० इन् मि०, खं० (बि० रि० सो०, पटना)	पृ० सं० १५३-१५७ १४६ ग्रं० स० ए० एम्, १५०‡	† इनके सम्बन्ध की सूचना के लिए दे० बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद् (पटना) से प्रकाशित 'हिन्दी साहित्य और बिहार' पृ० सं० ६५। ‡ बिहार-रिसर्च-सोसायटी, पटना

			१४७८ शकाब्द में अकबर द्वारा राज्य-प्रदान	१२८६ फ०		सी० सी० पार्ट ५ आर० एम्० पार्ट ५ प्रा० सं० ह० लि० पो० का वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० २३० पृ० २१७ पृ० सं० १६, ग्रं० सं० १६८	को ग्रंथकार थी 'अतीचार-निर्णय' नामक ग्रंथ की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई है। इनके रचनाकाल के सम्बन्ध में निम्न-लिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य है— "वसु नग वेद बसुन्धरा शक में अकबर साह। ठक्कुर सुबुधि महेश को कीन्हो मिथिला नाह।"
१८	रुद्रधर*	१. शुद्धि-विवेक	सोलहवीं शती	१६८६ श० १७१४ श० १६६१ श० १२५३ फ० १६६२ श० (?) १७७४ श० १६७७ श० १७३६ श० १६१४ श० १७०५ श० १६३८ श०	४२	सी० सी० पार्ट १ " " २ " " ३ आर० एल्० खं० ५ डि० कैट० ऑफ् मैन० इन् मि०, खं०, १ (बि० रि० सो०, पट०) पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० स०, प्र०)	पृ० ६५८ " १५७ " १३७ पृ० २५८ पृ० सं० ४३७–४४८, ग्रं० सं० ३८२, ए–जेड्, ए १ पृ० १८४, क्र० सं० ३१५, वे० सं० ८६८, ग्रं० सं० १३८५ एच् १।	*रुद्रधर उपाध्याय के अन्य तीन—वर्षकृत्य, व्रतपद्धति और श्राद्धविवेक—ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ बिहार रिसर्च सोसायटी को खोज में मिली हैं। दे० खा० वि० (बि० रि० सो०, पट०, खं० १) ग्रं० सं० ३१०, ए—इ; ३५६, ए—एस; ४०३, ए—डी। ग्रंथकार के सम्बन्ध में बि० रा० भा० प०, पट० से प्रकाशित 'हिन्दी-साहित्य और बिहार' की पृ० सं० ५४ भी द्रष्टव्य है। इस ग्रंथ के अनुसार

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खोज० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
				१७८४ श० १६४६ श० १६६६ श० १८१६ श० १७१० श०		प्रा० सं० लि० ग्रं० का वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प०, प८०)	पृ० सं० १८, १६, ग्रं० सं० १५३, १५६, १६२ ।	ग्रंथकार की 'पुष्पमाला' की पाण्डुलिपि भी मिली है । ग्रंथकार ने हिन्दी (मैथिली) में भी रचना की है । हि० मा० स०, प्र० को ग्रंथकार की 'श्यामापद्धति', 'श्राद्धनिर्णय' 'श्राद्धपद्धति', 'श्राद्धमाधव' और 'श्राद्ध-विधि' की १८४६ वि०, १६०० वि०, १७७५ वि० और १६५५ वि०, १८०० वि० में लिखित पाण्डुलिपियाँ खोज में मिली हैं । दे० 'पाण्डुलिपियाँ' पृ० सं० १८५, १८३ ।
१९	वररुचि*	१. प्राकृत-प्रकाश	प्रसिद्ध		११	डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन दि० अ० ला०, खं० ६	पृ० सं० २८५–२८६, ग्रं० सं० ७२२–७३० (८ प्र०)	* १–ग्रंथकार की 'षोढासमास' रचना भी खोज में मिली है । दे० रा० जै० शा० भं० ग्रं० सू०

			१८४३ वि०	रा० जैं० शा० भं० ग्रं० सू०, भाग २	पृ० सं० २५६, क्र० सं० १५१७–१५१८, वेष्टन सं० १२२६, १२२७	भाग २, पृ० सं० २८, क्र० सं० २६५, वेष्टन सं० २०६। २–'कन्नड़प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थ-सूची' के अनुसार मूडबिद्री जैनमठ में ग्रंथकार का तालपत्र पर कन्नड़ लिपि में 'प्राकृतमञ्जरी' नामक तथा आयुर्वेद-विषयक 'योगशतक' नामक दो रचनाएँ मिली हैं। दे० क्रमशः पृ० सं० १०६, २०७, क्र० सं० ६२ (ग्रं० सं०–५२३); ७ (ग्रं० सं० २८)। ३–अड्यार लाइब्रेरी के संग्रहालय में 'प्रयोग संग्रह' और 'समासपटल' की पाण्डु-लिपियाँ भी प्राप्त हुई हैं। दे०—डि० कैट० ऑफ् सं० मैन० इन् दि अ० लां०, पृ० सं० १६४ और २४३। ४–बिहार-रिसर्च-सोसायटी को खोज में 'भार्गवमुहूर्त्त' नामक रचना की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई है। इस पाण्डुलिपि को ग्रंथकार ७ दिवस में रचा था, ऐसा उल्लेख हुआ है। दे०–डि०
			१७६६ वि०	प्रा० सं० ह० लि० पो० का खो० वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० २५, ग्रं० सं० २२५	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
								कैट० ऑफ् मैन० इन् मि० (बि० रि० सो०, पट०) खं० ३, पृ० सं० २६६, ग्रं० सं० २२७। ५–यह रचना सी० सी० पार्ट १ पृ० ४७, पार्ट २, पृ० सं० ६३ में भी उल्लिखित हुई है। बड़ौदा सेंट्रल लाइब्रेरी के संग्रहालय में ग्रंथकार की 'फुल्लसूत्र' नामक रचना की पाण्डुलिपि सुरक्षित है। दे० कैट० ऑफ् मै० इन् दि सी० एल० बी०, खं० १, पृ० सं० ३१, क्र० सं० ७४, ए० स० ६३८४ (ए) ग्रं०.सं० ५००।
२०	शङ्कराचार्य	१. सौन्दर्य-लहरी	नवीं शती	१८४६ वि० १८४७ वि० १९१२ वि०	१३	पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० स०, प्र०)	पृ० सं० ३७६-३८०, क्र० सं० १६०–१७१ (१२ प्र०), वे० सं०	

			१६४४ वि०			१२१, ३१६, ११६८, ११६६, ८३५, १४५२, ३. ३३८, ७१३, ८५६, १४५२, ६२१; ग्रं० सं०- १२८, ३४४, १७६१, ४२५६, ११७०, २५४५, ४, ३६६, ७८२, १२-२८, २५४४, ३१८१।	
			१८५७ वि०		प्रा० सं० ह० लि० पो० का वि० ख० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० ६, ग्रं० सं० ७४	
	२. वाक्य सुधा	”		२८	डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दि अ० ला०, ख० ७	पृ० सं० ४०७–४१४, ग्रं० सं० ११०७–११३४ =२७ प्रतियाँ*	*तेलुगु–७, नागरी–३; अन्य–१७ =२७।
					प्रा० सं० ह० लि० पो० का वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० ११, ग्रं० सं० ६३	
	३. आत्म-बोध	”		६४	डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दि अ० ला०, खं० ७	पृ० सं० २५६–२६६, ग्रं० सं० ६७६–७३७= ६१ प्रतियाँ†	†तेलुगु–२२; नागरी–३; कन्नड़–२, अन्य–३४=६१।

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खोज० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
						पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० स०, प्र०)	पृ० सं० १०, क्र० सं० १२,१३ वेष्टन-सं० १४०५, १७४७, ग्रं०सं० २३१६, ३३५२।	
				१६५८ वि०		प्रा० सं० ह० लि० पो० का वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० ११, ग्रं० सं० ६४	
		४. वेदान्त-संज्ञा प्रक्रिया-	"		१	प्रा० सं० ह० लि० पो०, का वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० १२, ग्रं० ६५	
		५. शारीरक-मीमांसा-भाष्य	"	१६२५ वि०	५	डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दि अ० ला०, खं० ७	पृ० सं० ५७, ग्रं० सं० १४८	
						पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० सा०, प्र०)*	पृ० सं० ५, क्र० सं० ४१–४३, वे० सं७ १४६१, ११४६, ८८५,	*हि० सा० स०, प्र० को ग्रंथकार की अन्य— १. 'अद्वैत दीपिका', 'अपरो-

						प्रा० सं० ह० लि० पो० का खो० वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	ग्रं० सं० २७०४, १७४७, १३४० पृ० सं० १४, ग्रं० सं० १२२	त्मानुभूति', 'तत्त्वबोध', 'तत्त्व-विवेक', 'वज्रसूचीपंचम', 'ब्रह्म-जिज्ञासा', 'वेदांततत्त्वसार', 'वेदान्तसिद्धान्त', 'आत्मपूजा', 'ज्ञानप्रबोधमंजरी', 'ज्ञानबोध', 'द्वादशमहावाक्य', 'वाक्य-सुप्रकरण', 'विवेकचूडामणि', 'विष्णुसहस्रनामभाष्य', 'गणेश-सूक्त', 'परमहंसउपनिषद्', वज्र-सूचिकोपनिषद्', भगवद्गीता-भाष्य', 'अपराधसुन्दरीस्तोत्र', 'कृष्णस्तोत्र', 'गंगास्तोत्र', 'गणेश-स्तोत्र', 'जगन्नाथस्तोत्र', 'दक्षिणा-मूर्त्तिस्तोत्र', 'देव्यपराधस्तोत्र', 'नवरत्नमालास्तोत्र', 'पञ्चदशी-स्तोत्र', 'भवानीस्तोत्र', 'विष्णु-सहस्रनामस्तोत्र', मानसिस्तोत्र', 'वचनफलस्तोत्र', 'शिवपञ्चा-त्मकस्तोत्र', 'शिवस्तोत्र', 'सप्तशती-स्तोत्र', 'सरस्वतीस्तोत्र', 'सूर्य-स्तोत्र', 'हरिनाममालास्तोत्र', 'देवीमानसीपूजा', 'मानसी-

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
								पूजा', 'मेघमाला', 'आनन्द-लहरी', 'गोविन्दाष्टक', 'गङ्गाष्टक', 'जन्माष्टक', 'त्रिपुरसुन्दर्यष्टक', 'नामावलीस्तुति', 'बालाष्टक', 'भैरवाष्टक', 'रामाष्टक', शिवाष्टक', 'हरिनाममाला'—५२ ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ खोज में मिली हैं।
२१	हलायुध*	१. ब्राह्मण-सर्वस्व	सातवीं शती		१५	सी० सी० पार्ट १ " पार्ट २ " पार्ट ३ एस० सी० पी०	पृ० ३८६ " ८८ " ८४ १६०, १६१	* बिहार-रिसर्च-सोसायटी को खोज में ग्रंथकार के 'गृह्यसूत्र-भाष्यम्' और 'प्रायश्चित्तसर्वस्वम्, की पाण्डुलिपि भी प्राप्त हुई है। दे० डि० कै० ऑफ् मै० इन् मि०, खं० ४ (बि० रि० सो०, पट०)

			१७७३ शा० १६४१ वि० १६२७ शा०		डि० कैट० ऑफ् मै० इन् मि०, खं० ४ (बि० रि० सो०, पट०) " खं० १	पृ० सं० १६६–१६८, ग्रं० सं० ११५, ए० सी० ४ ग्रं० पृ० सं० ३२७–३२८, ग्रं० सं० २८६, ए, २८७	पृ० सं० ७७, ग्रं० सं० ५७। 'हलायुधकोश' नामक रचना भी खोज में मिली है। दे० प्रा० सं० ह० पो० का वि०, खं० ७५ (बि० रा० भा० प०, पट०) पृ० सं० २७, ग्रं० सं० २५१ की टिप्पणी।
			१७३६ वि०		आर० एम० पार्ट २ एन्० एस० खं० २ सी० सी०पार्ट १ प्रा० सं० ह० लि० पो० का खो० वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)—	पृ० सं० ७८ पृ० सं० ८४ (१६१५) पृ० सं० १६१, ३३७ पृ० १७, ग्रं० सं० १४८	
	२. छन्दोवृत्ति		१६२३ शा०	६	डि० कैट० ऑफ् मै० इन् मि०, खं० २ (बि० रि० सो०, पट०)	पृ० सं० ६, ७, ग्रं० सं० ७, ए०	
			१६२२ वि०		पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० स०, प्र०) प्रा० सं० ह० लि० पो० का खो० वि०, खं० ५ (बि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० ३०१, क्र० सं० १४, वे० सं०११७८, ग्रं० सं० ३०३१ पृ० सं० २७, ग्रं० सं० २५१	


मूल्य : 45/- रूपये मात्र